दीदी
जुलाई १९४४
व्योम- वार्षिक मूल्य ३)
श्र- एक प्रति ।)
BKD

प्रधान-सम्पादिका

श्रीमती यशोवती तिवारी

कुमारी हरदेवी मलकानी, एम० ए०, बी० टी०

सम्पादिका-समिति

रानी गिरिजादेवी (भदरी)

श्रीमती सत्यवती (स्नातिका), एम० एल० ए०

श्रीमती रत्नकुमारी, एम० ए०

श्रीमती कमला शिवपुरी, बी० ए०, बी० टी०, अलवर

कुमारी निर्मला गुप्ता, हिन्दी प्रभाकर

प्रबन्ध सम्पादक—श्रीनाथसिंह

पत्र-व्यवहार का पता

प्रेमलता देवी संचालिका "दीदी" इलाहाबाद

विषय सूची

जुलाई, सन १९४४

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ३) और एक प्रति का ।) है।

(२) पत्र व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी', कटरा, इलाहाबाद।

(३) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाकघर से पूछना चाहिए। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका को लिखना चाहिये।

(४) यदि एक दो मास के ही लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देना चाहिये।

(५) लेख, बदले के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि 'दीदी', कटरा प्रयाग के पते से भेजना चाहिये।

(६) न छप सकने की हालत में सिर्फ वे ही लेख आदि लौटाये जा सकेंगे जिनके लिये साथ में आवश्यक स्टाम्प भी रहेगा।

भूल सुधार

'दीदी' के इस अङ्क में कुछ प्रूफ की भूलें रह गई हैं। पृष्ठ १७४ पर ऊपर की तीसरी पंक्ति में तीसरा शब्द हम के बजाय इस होना चाहिये। पृष्ठ १७५ पर लेखका कु० शिवपुरी नहीं, क० शिवपुरी हैं। प्रारम्भ के लेखों में लेखकों के नाम के साथ श्री आदि आदर सूचक शब्द नहीं लगे हैं। कुछ और भी भूलें मिलेंगी। आशा है पाठक वृन्द इस बार हमें क्षमा करेंगे। आइन्दा ये भूलें नहीं होने पाएँगी।

ग्राहकों से निवेदन है कि वे

समय अपना ग्राहक नम्बर जरूर लिखा

आज्ञाओं का तुरन्त पालन हो सके।

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सबसे अच्छी और सबसे सस्ती सचित्र मासिक पत्रिका

बिहार, बीकानेर, जोधपुर, कोटा, ग्वालियर, यू० पी० की सरकारों द्वारा कन्या-शालाओं के लिये स्वीकृत।

वर्ष ५ } इलाहाबाद, जुलाई, १९४४ { संख्या ७

वन्दना

रचयिता, बैजनाथ प्रसाद खेतान

वर दे, शारदे !
ज्योतिर्मय अन्तर्पट करदे,
आशा को जीवन से भर दे,
अभिशापों की कणिकाओं को,
मुकताहल कर दे।
चरणों में बिजली की गति दे,
मेघों में बढ़ने की मति दे,
ऊषा-स्निग्ध कर दूँ कृष्णाम्बर,
वह लाली भर दे।
व्योम-कुञ्ज से निमित पलक कर,
अणु-अणु कण-कण परिमल से भर,
तार-तार मानस-वीणा में,
स्वर-लहरी भर दे !
वर दे, शारदे !

गीत

लेखक, फूलचन्द जायसवाल

आज न जाने मन क्यों चञ्चल !
तोड़ फोड़ संयम का बन्धन बनने को स्वतन्त्र है विह्वल।
अरे ! उठी यह कैसी आँधी जिसने कँपा दिया उर, अंतर;
आज बाँध क्या टूट पड़ेगा देख हृदय में उठे बवंडर;
अनायास ही आँसू लाकर नैन भिगोते मेरे अञ्चल।
आज न जाने मन०
जनम जनम का साथी बिछुड़ा तब न भरे मेरे ये लोचन;
आज याद ही उसकी आकर क्यों कर गई विकम्पित तन, मन;
इसे कहूँ उपहास दैव का अथवा अपने धीरज का छल।
आज न जाने मन०
कौन आज कहता कानों में 'यह समस्त जीवन ही उलझन;
मिलन सूचना दे देती है होगा शीघ्र, शीघ्र ही बिछुड़न;
रोले, मन का भार कदाचित हल्का करदे नैनों का जल';
आज न जाने मन०

स्त्री-आन्दोलन

लेखक, किशोरीदास बाजपेयी

जिस देश में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' लिख कर मनु ने स्त्री का महत्व प्रकट किया था, वहीं बाद में 'गर्ग-संहिता' में लिखा गया—

दुर्जनाः शिल्पिनो दासा दुष्टाश्च पटहाः स्त्रियः।
ताडिता मार्दवं यान्ति, न ते सत्कार-भाजनम् ॥

इसी का छायानुवाद करके गोस्वामी जी ने प्रकरणवश 'मानस' में रखा—

शूद्र गँवार ढोल पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।

संस्कृत-वाक्य सामान्यतः 'नीति' के तौर पर है, जिसमें अधिक अविचारिता है। परन्तु गोस्वामीजी ने जिस प्रकरण में इसे दिया है, उसे देखते बात बदल जाती है। प्रकरण से 'नारी' इस सामान्य शब्द का अर्थ भी 'वैसी नारी' यह विशेष अर्थ हो जाता है। आप अपने घर में कह जायँ, मैं जा रहा हूँ। सब ब्राह्मणों को अच्छी तरह भोजन करा देना, तो प्रकरण आदि से 'सब' शब्द का सामान्य अर्थ 'संसार भर के ब्राह्मण' न गृहीत होकर 'निमन्त्रित सब ब्राह्मण' यह विशेष अर्थ होगा। सारांश यह कि तुलसीदास ने उपर्युक्त संस्कृत पद्य का अनुवाद एक विशेष प्रकरण से में देकर नीति मत्ता का प्रदर्शन किया है। वैसे वे स्त्री जाति के प्रति सम्मान रखते थे।

यह सब हुआ प्रासंगिक। मतलब यह कि हमारे देश में समयवश सामाजिक स्थिति कुछ से कुछ हो गयी। जो कुटुम्ब स्वर्ग था, नरक बन गया। स्त्री-अवहेलना का फल सामने आया।

इसकी प्रतिक्रिया हुई। स्त्री-आन्दोलन उठा। कुछ अदूरदर्शी लोगों ने स्त्री और पुरुष में ऐसा वर्ग-भेद पैदा करने की चेष्टा की, जैसे मजदूर और पूँजीपति आदि की हो गई है। और सब वर्गों का अधिकारमूलक संघर्ष अच्छा फल दे सकता है; पर स्त्री-पुरुष का अधिकार मूलक संघर्ष कभी भी सुखद नहीं हो सकता। मानव-संसार में स्त्री और पुरुष के एक समझौते ने मधुर सङ्गठन पैदा किया कुटुम्ब बना। इस सङ्गठन में स्त्री और पुरुष दोनों का त्याग तथा कर्तव्य बुद्धि प्रधान आधार हैं। अधिकार बुद्धि नहीं। दिन पर दिन स्वकर्तव्य छोड़, 'हक-अधिकार' की ओर बढ़ने से मधुर वस्तु कटु होती जाती है और फलतः कवि आरसी प्रसाद के शब्दों में पुरुष कहने लगा है—

कितना अच्छा होता वह दिन,
जब तुम मेरे सङ्ग न होतीं।

इसी प्रकार जन्मान्तर में भी अनुगमन करने की चाह रखने वाली भारतीय स्त्री 'तलाक' का समर्थन कर रही है। परन्तु तलाक-प्रथा के चालू हो जाने पर भी क्या सुख और शान्ति सम्भव है?

स्त्री की अवहेलना करने में, इस समय, पुरुष की अपेक्षा स्त्री ही अधिक जिम्मेदार दिखाई देती है। मैंने देखा है, सुशिक्षिता स्त्री सभा में स्त्री-अधिकार के लिये पुरुष-वर्ग को हजार बार कोस कर घर में आती है, तो उसका रूप बदल जाता है। यह स्त्री अपने घर में स्वयं स्त्री-वर्ग की अवहेलना करती है। यदि घर में लड़के भी हैं और लड़कियाँ भी, तो निःसन्देह एक के लालन-पालन में कुछ और बात होगी। शिक्षा देने में, वस्तु वितरण में, प्यार में, सब तरह से, शिक्षित स्त्री भी लड़की की अपेक्षा लड़के को अधिक महत्व देती है। इसके विपरीत, पुरुष आज कल लड़के लड़की में समानता का बर्ताव करने लगे हैं। स्त्री में यह बात नहीं। इसमें स्वार्थ-भावना ही कारण हो सकती है। जो भी हो, चीज यह है।

आपने देखा, कहीं भी स्त्री का स्त्री के प्रति स्नेह है? यदि किसी घर में और सन्तान नहीं है, तो सुशिक्षित स्त्री को भी कभी अपने पति से यह अनुनय करते आपने कहीं देखा-सुना क्योंकि 'किसी लड़की को गोद ले लीजिए, जो संसार में हम लोगों का प्रतिनिधित्व करे?' पुरुष तो आपको ऐसे

मिल जायँगे, जो ऐसी उदात्त भावना प्रकट करें; पर स्त्री का मिलना कठिन है। तो, यों असमानता की जिम्मेदारी किस पर है? क्या स्त्री इस विषय में निर्दोष है?

ऐसी स्थिति में, अनेक 'ग्रेजूएट' महिलाएँ जो सभा सोसाइटियों में पुरुष वर्ग को गालियाँ देती फिरती हैं, उन्हें क्या कहा जाय? वे कर क्या रही हैं। उनके तथा उनके वकीलों के उद्योग से यदि वस्तुतः यह 'वर्ग-वैर' बद्धमूल हो गया, तो मधुर दाम्पत्य कहाँ जायगा?

जहाँ तक मैंने समझा है अँग्रेजी पढ़े लिखे कुछ स्त्री पुरुषों ने बिना अच्छी तरह सोचे समझे रोगी समाज की ऐसी 'चिकित्सा' शुरू कर दी है, जिससे अन्त में कहना पड़ेगा—

मर्ज बढ़ता गया, ज्यों ज्यों.........

इस लिये, समाज के हितचिन्तकों से, बहनों और भाइयों से निवेदन करने को मन होता है कि इस नाजुक स्थिति में बहुत सँभल कर ही नश्तर चलाना चाहिये। ऐसा न हो कि 'रग पर नश्तर' लग जाय।

पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों का भी कर्तव्य है। जो कुछ भी कोई कहे, सब छाप दिया जाय, यह सम्पादकत्व नहीं है। ताजमहल का बनाने वाला कारीगर ऐसा न था। 'कला' में विशेषज्ञता का महत्त्व है। यदि सब तरह के पत्थर ग्रहण किये जाते, चाहे जिसके लाये हुये चाहे जैसे ईंट-पत्थर ताजमहल का कारीगर ग्रहण कर लेता, तो उसकी कला का यह रूप न रहता। सम्पादन भी एक कला है। सम्पादक की जिम्मेदारी है। वह समाज की रग पहचाने। उसके भले की जितनी बातें हों उन्हें सम्पादित करके प्रकाशित करे, उन पर अपना मत दे। विचार-स्वातन्त्र्य के नाम पर सब कुछ छाप देना ठीक नहीं है। हलवाई स्वतन्त्र है, अपनी कला में, परन्तु अच्छी दिशा में। चाहे जैसी उत्तम मिठाई बनाने के लिये चाहे जैसी उपादान-सामग्री चुने। परन्तु, उस विष-मिश्रण करने की स्वतन्त्रता नहीं है। ऐसा करने से वह राजशासन द्वारा दण्डित होगा। स्त्री और पुरुष में कर्तव्य बुद्धि की प्रेरणा मुख्य कर होगी। अधिकार एक का दूसरे को देखना चाहिये। अपना अधिकार खुद देखने से और कर्तव्य न देखने से विष वृद्धि होगी और सामाजिक सङ्गठन शिथिल होने से पुरुष की अपेक्षा स्त्री की ही हानि अधिक है। यह सब सोचने की बात है।

याद रखने की बातें

लेखक, बुद्धिसागर वर्मा विशारद बी० ए० एल० टी०

१—साधारण व्यक्ति को दिन भर में २ सेर पानी पीना चाहिये।

२—यदि कमरे में खुले बर्तन में पानी डाल कर रख दिया जाय, तो बहुत अच्छा हो क्योंकि सारे दोष उसमें समा जायँगे।

३—गठिया या जिगर के रोगियों को सेब खूब खाना चाहिये।

४—प्याज खाने के बाद तरन्त ही जरा सी अजवाइन खाई जाय तो मुँह में दुर्गन्धि न आवेगी।

५—अंगूर का रस कब्ज दूर करता है, किन्तु बीज और छिलके कब्ज करते हैं।

६—गले के दोषों में नीमू के रस का गरारा उत्तम है, किन्तु निगलना नहीं चाहिये।

७—भुने हुये आलू में पोषणतत्त्व अधिक होता है। तले हुये आलू कब्ज करते हैं।

८—जलते हुये दीपक का गरम गरम कड़ुआ तैल हथेलियों पर मलने से जुकाम को आराम मिलता है।

९—गाय के उत्तम दुग्ध में घी शक्कर मिला कर सदा पीना चाहिये। इससे बढ़ कर बल, वीर्य और तेज को बढ़ाने वाली दवा नहीं है।

१०—गाय के गरम दूध में कालीमिर्च और मिश्री डाल कर पीना जुकाम की दवा है।

एक अक्षरशः सच्ची कहानी

'भिखारी'

लेखिका, श्रीमती गायत्री वर्मा, लखनऊ

दोपहर के कोई १२ बजे होंगे। बैठक का द्वार खुला था। सामने पड़े हुये निवाड़ के पलङ्ग पर बैठी मैं अपने छोटे राजा को चिड़ियाँ दिखा रही थी, कि अचानक मेरी दृष्टि द्वार के कोने पर अदृष्ट भाव से खड़े एक भिखारी की ओर जा लगी, जो हम माँ बेटों के प्रेममय खेल, और निश्छल हँसी को जाने कैसे अजीब भाव से देख रहा था। बीच बीच में कभी कभी उसकी छोटी सी दाढ़ी के ऊपर चमकते होंठ धीरे से हिल उठते थे। न जाने क्यों।

संसार में जोरों से फैले ढोंग में से सत्य की खोज निकालने की क्षमता नहीं थी मुझमें, और इसीलिये मैं एक दम कुछ कुछ और शङ्कित सी बोल उठी।

'यहाँ क्यों खड़े हो जी ? क्या चाहिये तुम्हें ?' भिखारी सिटपिटा गया। पलकें झुका कर धीरे से बोला—'कुछ नहीं।'

'फिर यहाँ क्यों खड़े हो ?'

'बबुआ हँस रहा था।' थोड़ी देर चुप रह कर उसने उसी तरह नीची गरदन किये उत्तर दिया। उसके चेहरे पर आकर्षण था—और था भोलापन। अवस्था होगी २५ या ३०। मुख पर छोटी सी दाढ़ी थी। पैर टेढ़े और सूजे हुये थे। एक हाथ में सहारे की लकड़ी थी और दूसरे में दो डिब्बे, एक टाट का टुकड़ा, और मिट्टी का एक छिछला सा प्याला।

बबुआ पर उसका इतना ममत्व क्यों ? मैंने अपने से पूँछा। मुझे उस पर कुछ दया सी हो आई। उसने मेरे बबुआ पर ममता दिखाई थी न ? मैंने उसे बैठने को कहा, और खाना मँगा कर खिलाया। खा पी कर वह कुछ सन्तुष्ट सा हो गया। टाट का टुकड़ा बिछा कर वह सन्तोषी जीव दिन भर, साँय साँय करती गर्म लू में वहीं बैठक के द्वार पर पड़ा रहा।

तीसरे पहर जब ठेले वाला मेरे यहाँ तरकारी देने आया तो उसने उससे दो पैसे की लौकी खरीद ली। जब मैंने तरकारी लेने के लिये द्वार खोला, तब सहारे की लकड़ी टेकता हुआ भिखारी, हाथ की लौकी और एक डिब्बे में भरा आध पाव आटा लिये मेरे पास आया, पलकें नीची करके विनय पूर्ण स्वर में बोला—'बहू जी ! ये हमारे लिये।'

जाने कैसे विचित्र भाव मेरे मस्तिष्क में आ आ कर टकराने लगे। भिखारी में इतना स्वावलम्ब कहाँ से ? मारे विस्मय के तरकारी लेना भूल मैं पूँछ बैठी उससे !

कौन जाति है तुम्हारी ?

'गुज्जर' (गूजर) उसने कहा।

क्या तुम्हारे कोई नहीं है ?

'सब कोई हैं ?'

'फिर भीख क्यों माँगते हो ?'

उत्तर देते समय मैंने लक्ष्य किया कि उसके स्वर में कम्पन था। जिस भाषा में उसने अपनी कहानी प्रारम्भ की उसे मैं पूर्णतया तो नहीं समझ पाई, हाँ ! कुछ अपनी बोल चाल के शब्द पहचान कर उसका सार मैंने यों निकाला कि—

उसके, भाई, माँ, मामा, बहन सब कोई है। उसका 'देश' है (नाम मैं नहीं समझ पाई) सहारनपुर के इधर...। एक दिन वह ऊँटनी चराने के लिये गया तो उसे पन्द्रह-बीस गूजर मिले और ५००) में उससे ऊँटनी बेंच देने का अनुरोध करने लगे। इसने ५००) में अच्छा सौदा समझ कर बच्चे समेत ऊँटनी उन्हें दे दी और रुपये लेकर घर चला। कोई आध घण्टे चलने के बाद, उन्हीं गूजरों में से दो ने पीछे से आकर उसे लाठियाँ मारीं और रुपया छीन कर भाग गये। (उसका कहना है कि उन गूजरों को वह

देखे तो वह पहचान सकता है) उसे नहीं मालूम कि वह घर कैसे पहुँचा। भाइयों ने इसे ऊँटनी की चोरी लगाई और पीट कर घर से निकाल दिया। लाठियों की चोट से इसके टाँग की हड्डी टूट गई थी (अनुमानतः मोच इत्यादि आ गई होगी, नहीं तो चल कैसे पाता।) थोड़े दिन यह घर के कुछ दूर एक खेत में पड़ा रहा। माँ ने और लड़कों से चुरा कर इसे खाना दिया। एक दिन यह बात भाइयों को मालूम हो गई, और फिर पिटने के डर से वह भाग खड़ा हुआ। इसी प्रसङ्ग में ज्ञात हुआ कि राह में इसके पास =) पैसे और माँ का दिया हुआ थोड़ा सा आटा था। रास्ते में भूख लगने पर आधा उसने घोल कर पी लिया और थोड़ा, डिब्बे में है। अभी तक तो उसने भीख नहीं माँगी, आगे जो बदा हो।'

चाहे उसने यह सब झूठ ही क्यों न कहा हो, पर मेरा मन उस पर अविश्वास करने को न चाहा। खराब जाने के विचार से मैंने उसकी लौकी ले ली, और आटा लौटाते हुये उसे आश्वासन दिया कि वह निश्चिन्त रहे, समय पर उसे खाना मिल जायगा।

खाना तैयार हो चुकने पर जब मैं भिखारी को देखने गई तब उसका कहीं पता न था।

शाम के ६ बज चुके थे, लू बन्द हो गई थी नौकर छोटे राजा को लिये द्वार पर खड़ा था, मैं धोबी के लिये कपड़े लिख रही थी कि अचानक नौकर के—'भइया से दूर खड़ा हो।' इस कर्कश वाक्य ने मुझे अनायास चौंका दिया।

खिड़की से झाँक कर मैंने देखा कि छोटे राजा भिखारी के हाथ से खरबूजा छीन लेने की चेष्टा में उछल उछल कर किलक रहे थे। और भिखारी कुछ दूर पर खड़ा हो खरबूजे दिखा कर उन्हें ललचा रहा था।

अचानक भिखारी की दृष्टि जाने कैसे मेरी ओर घूम गई। और कुछ सिटपिटाया सा तीन चार पग पीछे हट कर भयभीत हो वह बोल उठा—

'बहू जी ! ये बबुआ को ·············?'

मेरा हृदय भर आया। नौकर से कह कर छोटे राजा को भिखारी के पास खड़ा कर दिया। यद्यपि वह अभी कुछ भी नहीं खाते थे पर मुझे भिखारी के हृदय पर ठेस लगाना उचित नहीं जँचा।

भिखारी के हाथ से लपक कर खरबूजा छीनते हुये छोटे राजा ने झुक कर, उन पर अपने छोटे छोटे दाँत गड़ा दिये। और एक आत्मीयता के भाव से भिखारी के मुँह पर अपनी दृष्टि जमा दी।

और······भिखारी के मुँह पर कृतज्ञता, शिष्टता, और वात्सल्य से भरी पूरी एक आकर्षक मुस्कान थी !!

गीत

लेखक, श्री रमेशचन्द्र माहेश्वरी "प्रदीप"

सङ्गति क्यों न तुझे यह भाई।
जग था विमुख, किन्तु तू सम्मुख,
था बस इतना ही मेरा सुख,
भूल गया था दुनिया के दुख,
थी न पराजय अब तक पाई।
मैं था दीप, स्नेह था तेरा,
पथ में कब रह सका अँधेरा,
था अपूर्ण ही अपना फेरा,
फिर सहसा क्यों ज्योति बुझाई।
अब रीती यौवन की प्याली,
आज लुप्त अधरों से लाली,
रूठ गया उपवन से माली,
क्यों सब पर यह धूल उड़ाई।
हिम्मत टूटी, आशा हारी,
आज हुई श्वासें भी भारी,
कितनी मंजिल दूर हमारी,
पथ में कैसी आज विदाई !
सङ्गति क्यों न तुझे यह भाई।

पोशाक के द्वारा बालक का सुधार

लेखिका, कुमारी ज्ञानवती एम० ए०

यदि आपके बच्चे में कोई दोष दिखाई पड़े तो सबसे पहले यह देखें कि उसकी पोषाक तो बुरी नहीं है। प्रायः पोषाक बदल देने से ही कितने ही लड़के सुधर जाते है। यही बात हम लेख में विद्वान लेखिका ने बड़े सुन्दर ढङ्ग से साबित की है।

कितने ही लड़के लड़कियाँ स्कूल में भोंदू या फिसड्डी समझे जाते हैं। प्रायः उन पर मार भी पड़ती है। माँ बाप सोच नहीं पाते कि उनको कैसे ठीक रास्ते पर लावें। परन्तु इसका उपाय बहुत सहज है। उन बच्चों को नई पोशाक बनवा दीजिये और देखिये कि उनमें कितना परिवतन हो जाता है।

इसका अनुभव मैंने स्वयं किया है। सुनिये। उस दिन तीसरे पहर मैं अपनी एक पड़ोसिन के घर गई तो देखा कि उसकी अष्ट वर्षीया लड़की राजदुलारी बाहर के कमरे में खड़ी सिसक रही है। उसके स्कूल से शिकायत आई थी कि वह पढ़ने में जी नहीं लगाती। इसलिये वह अपनी माँ के सामने जाने से डर रही थी।

लड़की मुझे बड़ी प्यारी लगती थी। मैं चाहती थी, उसकी ऐसी शिकायत न आवे। इसलिये मैं उसे अपने घर ले आई। मैंने उससे बातें की।

वह एक अच्छी रङ्गी साड़ी पहने हुये थी और गुड़िया सी बड़ी अच्छी लगती थी। उसने रो रो कर कहा—'मेरा नाम कटवा दो। मैं स्कूल न जाऊँगी।' मैंने उससे कहा—'बेटी डरो मत। मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे स्कूल चलूँगी और तुम्हारी मास्टरनी से बातें करूँगी।'

दूसरे दिन मैं उसके साथ उसके स्कूल गई। उसकी मास्टरनी ने कहा—'इसका कोई इलाज नहीं है। यह बिलकुल गधी है।'

'आखिर क्या बात है?' मैंने पूछा।

मास्टरनी बोली—यह न तो किसी सवाल का जवाब देती है और न खेल कूद में शरीक होती है। बस, मन लटकाये बैठी रहती है।

'ऐसा क्यों है?' मैंने पूछा। पर मास्टरनी इसका कोई जवाब न दे सकी।

तब मैंने कहा—'मैं इस लड़की का केस समझना चाहती हूँ। आप इसे १५ दिन और क्लास में आने दें और इससे केवल सरल प्रश्न करें।'

'सरल प्रश्न भी इसके दिमाग में नहीं चढ़ते।'

'ठीक है पर आप १५ दिन का मौका दें।

मैं उस लड़की को लेकर लौट आई। मैंने दर्जे में एक बात देखी थी। दर्जे की सब लड़कियाँ 'फ्राक' पहने हुये थी और चोटियाँ सँवारे हुये थीं। पर वह लड़की साड़ी पहने थी और उसकी चोटी में पुराना मैला फीता लगा था।

खैर उस दिन से मैं रोज राजदुलारी को अपने घर सुलाती और उससे बातें करती। एक दिन मैंने अपने हाथ से राजदुलारी के बाल सँवारे और एक बढ़िया सा फीता उसके सिर में बाँध दिया। ऊपर फूल बना दिया।

राजदुलारी ने आइने में अपना मुँह देखा और खुश हुई। उसमें फुर्ती आ गई। वह चञ्चल हो उठी। मेरी समझ में तत्काल आ गया कि यदि इसे भी साड़ी की जगह फ्राक पहनाया जाय जैसा कि इसके दर्जे की सब लड़कियाँ पहनती हैं और इसका बाल ठीक से सँवारा जाय तो यह स्कूल में तेज बन सकती है।

मैंने उसकी माँ से कहा। उसके माँ बाप पुराने खयाल के थे। वे लड़की को प्राचीन पीढ़ी की लड़कियों की भाँति

ही रखना चाहते थे। मेरी बात पर वे कहने लगे—'भला पोशाक से और पढ़ने क्या प्रयोजन ?'

मैंने उनसे घण्टों बहस की। अपनी लड़की को वे पढ़ाना चाहते थे। वे उसे नई स्कूली पोशाक बनवाने को तैयार हो गये।

शीघ्र ही राजदुलारी की अन्य लड़कियों की भाँति फ्राक पहन कर, बाल सँवार कर, बढ़िया सा रङ्गीन फीता लगा कर स्कूल जाने लगी।

एक ही हफ्ते में रिपोर्ट आई—'राजदुलारी बिलकुल बदल गई है। अब वह सही या गलत सवालों का जवाब देती है और स्कूल के खेलों में शरीक होती है।'

इस प्रकार हमने प्रत्यक्ष देखा कि राजदुलारी का भोंदूपन बहुत कुछ उसकी पोशाक के कारण था। मास्टरनी उसे भोंदू कहें—यह उसे गवारा था परन्तु स्कूल की लड़कियाँ जब वह जवाब देने को खड़ी हों तब उसकी पुराने ढङ्ग की पोशाक और मैली चोटी देख कर हँसे, यह उसे गवारा नहीं था। वह नहीं चाहती थी कि उसकी पोशाक अपनी सहेलियों की नजर में भद्दी हो। वह उन्हीं की सी पोशाक में स्कूल जाना चाहती थी।

जैसे स्त्री अच्छी पोशाक में खुश दिखती है। जैसे पुरुष अच्छी पोशाक में श्रेष्ठ समझा जाता है वैसे ही बच्चे भी अच्छी पोशाक धारण करना चाहते हैं। अच्छी पोशाक उन्हें चञ्चल, खुश और मुस्तैद रखती है। अच्छी पोशाक उनका भविष्य अच्छा बनाती है। इसलिये जब आपके बच्चे में कोई दोष दिखाई पड़े या वह भोंदू कहलाने लगे तब सबसे पहले यह देखें कि उसके पोशाक में सुधार की जरूरत तो नहीं है ?

———

घरेलू नुसखे

नींबू को चीरने से पहले कुछ देर गर्म पानी में रखिये, रस अधिक निकलेगा।

कत्थे का दाग—दूध में वह कपड़े का स्थान भिगो दीजिये कुछ देर में बहुत फीका पड़ जायगा, फिर साबुन से धो डालिये।

स्याही के दाग—लाल टमाटर के रस में उस स्थान को भिगो दीजिजिये, रात भर ऐसा रखने से दाग जाते रहेंगे।

——— —कु० शिवपुरी, अलवर

जागो, जागो

हुआ सबेरा, जागो, जागो।
विस्तर छोड़ो, भागे सुस्ती।
घूमो-घामो, आवे चुस्ती॥
सुस्ती, आलस त्यागो, त्यागो।
हुआ सबेरा, जागो, जागो॥
जगदीश्वर को माथ नवाओ।
सच्चे दिल से विनय सुनाओ॥
ज्ञान, बुद्धि, बल माँगो, माँगो।
हुआ सबेरा, जागो, जागो॥
अच्छे कामों को अपनाओ।
भले बनो, अच्छे कहलाओ॥
बुरे काम से, भागो, भागो।
हुआ सबेरा, जागो, जागो॥

—'स्वर्ण सहोदर'

नई पहेलिया

(१)

पेट में अँगुली, सिर पर पत्थर।

(२)

छोटी सी डिबिया, डिब डिब करे।
छोटे छोटे मोती, झर झर करे॥

—मालती देवी अदीब

(३)

ऊपर डब्बा नीचे डब्बा।
जिसमें बैठे भोले बाबा॥

—चन्द्रकुमारी अग्रवाल

उत्तर—(१) अँगूठी। (२) आँसू। (३) नारियल।

———

एक युद्धकालीन-रूसी कहानी

पुकार

लेखक, डाक्टर मदन लाल शर्मा

(१)

'थीसिया क्या तुम मुझे सचमुच प्यार करती हो?' उत्तेजित होते हुये गोर्की ने पूछा।

'बस रहने भी दो। इस बात के अलावा और कोई दूसरा विषय भी आपके पास है या नहीं?' पास ही की लता का पुष्प तोड़ते हुये थीसिया ने कहा।

'नहीं थीसिया यह बात इस तरह टालने की नहीं। मैं तुमसे आज पूर्णतया जान लेना चाहता हूँ कि तुम मुझसे शादी करने को प्रस्तुत हो या नहीं?'

'ऊँह, मेरी शादी तो कभी की हो चुकी।' कहते हुये थीसिया ने मुँह विचका दिया।

इतना सुनते ही गोर्की के मुख का रङ्ग फीका पड़ गया और उसने हताश सा होकर उच्छ्वास छोड़ते हुये कहा— 'किन्तु थीसिया, यह बात मुझसे पहले ही कहती थी। तुमने अब तक मुझे धोके में क्यों रक्खा? थीसिया, तुमने मेरे समस्त अरमानों को कुचल डाला। मेरी सुरभित आशाओं पर तुषारपात कर दिया। मेरे कमजोर हृदय पर तुमने यह एक भीषण आघात किया है। मुझे तुमसे यह आशा हरगिज नहीं थी।'

'हः हः हः' थीसिया ने खुल कर एक ठहाका लगाया, 'तुम भी निरे बुद्धू ही हो। अरे इसी पार्क में इसी पेड़ के नीचे मैंने तुम्हें गारलैंड पहनाया था न उस रोज! बस मेरा विवाह तो हो चुका।' थीसिया ने कटाक्ष करते हुये कहा।

'ओह! समझा!! तुम बड़ी छलनामयी हो थीसिया।' गोर्की ने शान्ति की साँस ली। खुशी से उसका कलेजा उछलने लग गया था।

'क्यों डीयर तुम घबरा गये थे? स्त्री के दिल को समझने की तुम में कुव्वत ही नहीं है......'

'अच्छा, अच्छा—अब बहुत समय हो गया। पापा ही के लिये इन्तजार कर रहे होंगे। चलो, अब घर चलें।'

× × ×

गोर्की का थीसिया के साथ विवाह होने वाला है। यह दिवस मानव जीवन में एक शुभ घड़ी है। भावी की मधुर कल्पनाओं से गोर्की का हृदय आलोड़ित हो रहा था। प्रसन्नता से उसका अंग अंग फड़क रहा था। प्रातःकाल से ही वह अपनी वाटिका में घूम रहा था। इतने में ही नौकर ने ताजा अखबार लाकर गोर्की के हाथ में पकड़ा दिया। अखबार के मुख पृष्ठ पर ही मोटे मोटे अक्षरों में लिखा था, 'रूस जर्मन युद्ध आरम्भ' गोर्की एक साँस में सारा कालम पढ़ गया और उसका मुँह विकृत हो उठा। उसके चेहरे पर एक के बाद दूसरी भाव रेखायें खिंचने और मिटने लगी। थोड़ी देर पश्चात वह एक झटका लेकर सँभला जैसे उसने कुछ निश्चय कर लिया हो।

अखबार की प्रति हाथ में लिये वह थीसिया के यहाँ पहुँचा। वहाँ देखा टेबल पर थीसिया और उसके पापा बैठे चाय पी रहे थे।

'ओह गोर्की तुम। आओ बेटा। चाय पियो।' थीसिया के पापा ने गोर्की से हाथ मिलाते हुये कहा।

अखबार की प्रति थीसिया के पिता की ओर फेंकते हुये गोर्की ने कहा—'हमारे देश के विरुद्ध अत्याचारी जरमनों ने कल ही युद्ध छेड़ दिया है। वे हमारी सांस्कृतिक चेतना को नष्ट कर देना चाहते हैं। साम्यवाद के विरुद्ध वे अपनी नाजी हुकूमत कायम करने पर कटिबद्ध हैं। देश की दौलतचन्द पूजीपतियों के हाथ में देकर वे मजदूर एवं किसानों को पैरों तले रोंदना चाहते हैं। देश की पुकार है कि इस समय प्रत्येक नवयुवक को दुश्मन के विरुद्ध खड़ा होना चाहिये। कर्तव्य मुझे बुला रहा है। मैं युद्ध में

जाऊँगा, पिता जी।' कहते कहते गोर्की का मुख उत्तेजना से लाल हो उठा।

थीसिया के मुख से अकस्मात एक चीख निकल पड़ी और चाय का प्याला हाथ से छिटक कर चूर चूर हो गया।

'डीयर गोर्की यह तुमने क्या कर डाला ?'

'नहीं थीसिया मैंने जाने का पूर्ण निश्चय कर लिया है। मुझे मालूम है कि इस समाचार को सुन कर तुम्हारे हृदय में एक भीषण चोट पहुँची होगी और सम्भव है तुम इसे सहन न कर सको। परन्तु मेरे हृदय में भी कम दर्द नहीं है, थीसिया। हो सकता तो अपना कलेजा चीर कर दिखा देता कि तुम्हारे लिये कितना अगाध प्रेम मेरे हृदय में है। किन्तु लाचार हूँ, मुझे जाना ही होगा।

'नहीं बेटा, यह तो हमारा कर्तव्य है कि अपने देश की सस्कृत सभ्यता पर कोई बलात्कार करे तो हम भी कटिबद्ध होकर उस शक्ति के विरुद्ध खड़े हो जायँ। किन्तु कल ही तुम्हारी शादी है। चन्द दिनों के बाद तुम भले ही चले जाना।' थीसिया के पापा ने गम्भीर मुद्रा से चाय का घूँट लेते हुये कहा।

'नहीं पापा, मैं कल तक भी यहाँ ठहरने में असमर्थ हूँ। मैं तो इसी क्षण अपना नाम फौज में लिखवाने जा रहा हूँ। रूस हमारा है हम रूस के हैं। हमारी रग रग, नस नस से यही आवाज उठ रही है कि देश की पुकार सुनो और मातृ भूमि पर हँसते हँसते बलिदान हो जाओ। इस समय रूस का एक एक घर राष्ट्रीय युद्ध मोर्चा बनेगा। घर घर में मातायें अपने बच्चों को स्त्रियें अपने पतियों को हँसते हँसते युद्ध के लिये विदा देंगी। थीसिया, क्या तुममें भी इतना साहस है ?' गोर्की ने थीसिया की तरफ मुखातिब होकर पूछा।

'जाओ डीयर जाओ। किस मुँह से मैं तुम्हें रोकूँ। इन्सान की शादी और भी किसी दिन हो सकती है किन्तु इस समय देश की पुकार का जवाब न देकर हम अपने ही देश के जानी दुशमन साबित होंगे। अपनी आँखों से अपने देश की पताका पर कैसे संकट आने देगें। जाओ डीयर मैं तुम्हें विदा देती हूँ। नारी हृदय कमजोर है फिर भी उस कठोर बनाना ही होगा।' थीसिया ने एक आह छोड़ते हुये कहा।

'मुझे तुमसे यही उम्मीद थी थीसिया। विजयी होकर हम तुमसे मिलेगें।'……'अच्छा विदा।'

(२)

गोर्की चला गया किन्तु थीसिया की दुनिया सूनी हो गई। रूस का बच्चा बच्चा नाजी शक्ति के विरुद्ध राष्ट्रीय युद्ध में अपनी आहुति दे रहा था। किन्तु थीसिया गोर्की के लिये विकल थी। वह रह रह कर आशंका से काँप उठती। तारे गिन कर वह रातें व्यतीत कर रही थी। उसके जीवन में अब कोई रस नहीं रह गया था।

थीसिया के पापा भी कम उदास न थे वे थीसिया की दशा देख कर बड़े व्यथित रहते थे। एक दिन अन्त में उन्होंने 'टी' टेबल पर थीसिया से पूछ ही लिया—'क्यों बेटी तुम इतनी उदास क्यों रहती हो ? तुम्हें हो क्या गया है ?'

'कुछ नहीं पापा। गोर्की के इन दिनों कोई समाचार नहीं आ रहे हैं चिन्ता हो रही है।'

'बेटी, गोर्की की नस नस में रूसी खून बह रहा है वह अपने देश के लिये लड़ रहा है। मैं बूढ़ा हूँ नहीं तो मैं आज इस प्रकार बैठा रहता। किन्तु तुम्हें गोर्की के जाने का दुख हो रहा है।'

'नहीं पापा। मुझे गोर्की पर गर्व है। पापा ! पापा !!'

'क्या है बेटी ?'

'मैं भी इस राष्ट्रीय युद्ध में कुछ मदद करूँगी। नहीं, नहीं मैं जरूर जाऊँगी।'

'उत्तेजित न हो बेटी। मुझ बूढ़े को छोड़ कर तुम कहाँ जाओगी ?'

थीसिया ने अपने पापा की ओर देखा। वेदना से उसका कण्ठ भर आया। उसने अपना सिर पापा के कन्धे पर रख दिया। पितृ हृदय का समस्त प्यार वेगवती नदी के समान उमड़ आया। थीसिया के सिर पर हाथ सहलाते हुए उन्होंने रुद्ध कण्ठ से कहा—'बेटी !'

'पापा।'

दोनों एक क्षण के लिये अपने आपको भूल बैठे। किन्तु दूसरे ही क्षण थीसिया के पापा सम्भल गये। उन्होंने अपनी कमजोरी को भाँप लिया। भर्राये गले से उन्होंने कहा—'बेटी तुम मुझे बहुत प्यारी हो किन्तु रूस मुझे

तुमसे भी अधिक प्यारा है । जाओ तुम जाओ । कुछ नहीं तो तुम नर्स ही बनो । घायल सैनिकों के घावों को भरो — उन्हें शान्ति दो । उनमें जोश और उमंग भरो और —।'

'पापा, मैं जरूर नर्स बनूगी । शीघ्र से शीघ्र आहत सैनिकों के घावों को भर कर उन्हें युद्ध के लिये प्रस्थान करूँगी । आर्शीवाद दीजिये पिता जी ताकि मैं अपने कार्य में सफल होऊँ ।' प्रसन्नचित्त थीसिया ने उमंग के साथ कहा ।

'जाओ बेटी जाओ । ईश्वर तुम्हारी कामना पूर्ण करे ।'

(३)

अस्पताल घायल सैनिकों से खचा खच भरा है । पलंग पर स्थान स्थान पर पट्टियें बँधे सैनिक लेटे हैं । सर्जन डाक्टर आदि बड़ी तत्परता से दौड़ धूप कर रहे हैं । कम्पाउण्डर और नर्सों को क्षण मात्र के लिये भी विश्राम करने का अवकाश नहीं है । सैनिक अपनी पीड़ाओं से कहराते हैं । नर्सें उन्हें बड़ी मधुर भाषा में आश्वासन देती हैं । थोड़े से समय के लिये वे अपने दर्द को भूल से जरूर जाते हैं परन्तु फिर थोड़े ही समय के पश्चात् वे दूने वेग से अपने दर्द के मारे कराह उठते हैं ।

थीसिया इसी अस्पताल में नर्स का कार्य कर रही है और बड़ी तत्परता से हर मरीज को अपना ही निजी आत्मीय समझ कर सेवा करती है । वह समझती है कि यह समस्त सैनिक देश के लिये अपनी आहुति देकर प्यारे गोर्की की महत्त्वकांक्षा की पूर्ती में मदद देने वाले हैं ।

'पानी, पानी' एक मरीज चिल्ला उठा । थीसिया ने तपाक से यह कहते हुये 'घबराओ नहीं' गिलास उसके होटों लगा दिया ।

'ओह भला हो तेरा ।' कह कर मरीज ने एक शान्ति की साँस लेते हुये अपनी आखें बन्द कर दी ।

'क्यों कष्ट ज्यादा हो रहा है सैनिक ?'

'कष्ट ! नहीं बहन तुम्हारे रहते यहाँ कष्ट हो ही कैसे सकता है । तुम हमारे शरीर के घावों को ही नहीं वरन् दिल के घावों की भी मरहम पट्टी करती हो । तुम एक नव उत्साह, एक नया जोश एक नई उमंग का इन्जेकशन देकर फिर से हमें देश के लिये लड़ने को कटिबद्ध करती हो । तुम्हारा एक शब्द मुर्दा दिलों में नवजीवन का सञ्चार करता है, रूस तुम्हारे जैसी देवियों को पाकर धन्य है ।'

'नहीं सैनिक मैं तो केवल अपना कर्तव्य पालन करती हूँ ·········क्यों सैनिक तुम्हारी कभी युद्धक्षेत्र में गोर्की से मुलाकात हुई है ?'

'क्या कहा गोर्की से ! ओह, उन्हें कौन नहीं जानता !! बहन वे तो मनुष्य नहीं देवता हैं । रूस के लिये तो वे एक आशीर्वाद हैं । वे हमारी टुकड़ी के नायक हैं । भला उन्हें मैं कैसे न जानूँगा ?'

'क्यों सैनिक, वे कभी युद्ध क्षेत्र में कमजोरी तो नहीं दिखाते ?'

'कमजोरी ! क्या कहती हो बहन ? वे तो एक तुफान हैं जिधर जाते हैं उधर शत्रु सैना पर आतंक छा जाता है । वे रूस के लिये गौरव की वस्तु हैं ? उनकी इच्छा है कि वे विजयी होकर ही अपनी पत्नी से मुलाकात करेंगे । वे कहते हैं कि उनकी पत्नी ने हाथों से विदा दी है । अतएव युद्ध में किसी प्रकार की कमजोरी दिखाना उसके हृदय को एक भीषण ठेस पहुँचाना है । सचमुच वह देवी धन्य है जिसने समस्त सुखों को ठोकर मार कर अपने प्रेमी को युद्ध के लिये विदा दी है ।'

थीशिया के मुख पर एक अलौकिक आभा छा गई । गर्व से उसकी छाती फूल उठी और आनन्द विभोर होकर उसने सैनिक का हाथ चूम लिया ।

× × ×

थीसिया घायल सैनिकों की उपचर्या करने में तल्लीन थी । वह अपनी तन्मयता में अपने अस्तित्व की भिन्नता को ही भूल गई थी । वह तो घायल सैनिको की पीड़ा को अपनी ही पीड़ा समझ कर सेवा कर रही थी । वह नवीन घायलों को सान्त्वना देती हुई आगे बढ़ रही थी । वह एक नवीन घायलों को सान्तवना देती हुई आगे बढ़ रही थी । वह एक घायल के पास ठिठक कर खड़ी हो गई । उसके शरीर पर जगह जगह पट्टियाँ बँधी हुई थी । घावों से उसका मुख तक विकृत हो चुका था । वह मृत्यु के मुख में था । किन्तु यही सब कुछ परिवर्तन क्या थीसिया को उसे पहचानने से रोक सकता था । उसे देखते ही थीसिया के पैर जड़वत हो गये । वह पोषाण मूर्ति के समान निस्पन्द खड़ी थी । उसका सिर भन्नाने लगा । भीतर का तुफान बाहर आने को विद्रोह

कर उठा किन्तु वाणी अवरुद्ध थी। उसकी पीड़ा का स्पष्टीकरण करने में शब्द शक्ति असमर्थ थी। उसकी मूल वेदना आँखों से ही पढ़ी जा सकती थी। अन्तर के उबाल से दृगों का पानी भी वाष्प बन कर उड़ चुका था। अभागी रो भी तो नहीं सकती थी। अन्त में काँपते स्वर और भर्राये गले से उसने उस घायल सैनिक को पुकारा—'गोर्की !'

सैनिक ने अपनी आँखें खोली, सामने किसी स्त्री मूर्ति को खड़ी देख कर पूछा—'तुम-तुम कौन ? थीसिया। ओह, वह यहाँ हो ही कैसे सकती है।' कहते हुये उसने पुनः अपनी आँखें बन्द कर ली।

इन शब्दों के सुनते ही थीसिया के हृदय में एक भीषण आघात पहुँचा वह तिलमिला उठी अपने अन्तर की पीड़ा से और घायल कहरा उठा अपनी भौतिक वेदना से !!! वह भूल गई अपनी स्थिति और वातावरण की गम्भीरता को और चिपट कर उस घायल सैनिक से चीख उठी वह—'गोर्की प्यारे गोर्की !! मैं थीसिया ही हूँ। अपनी आँखों पर विश्वास करो मैं........।'

'ओह क्या कहा ? तुम घायल सैनिकों की उपचर्या करती हो।' गोर्की ने करवट बदलते हुये पूछा।

'हाँ गोर्की तुम्हारे जाने के पश्चात् मेरी आँखें खुल गईं। रूस का बच्चा बच्चा जब निर्भीक होकर खून बहा रहा है तो क्या मैं उनके घावों को भरने में भी असमर्थ रहूँगी ?'

'ओह. मेरी अच्छी थीसिया ! यह सम्वाद सुन कर तुम्हें इस वेष में देख कर मेरी आत्मा को शान्ति मिली है।.........क्यों थीसिया तुम युद्ध स्थल के समाचार दे सकती हो ?'

'गोर्की. शान्ती रक्खो। हमारी सैना जर्मनों को सफलता पूर्वक रोके खड़ी है।'

'अच्छा !!' कहते हुये गोर्की ने एक शान्ति की साँस ली। परन्तु अधिक बोलने के कारण उसके घावों से रक्त चूने लगा। उसकी स्थिति नाजुक होती जा रही थी।

'अधिक न बोलो गोर्की, तुम शीघ्र ही अच्छे हो जाओगे।

'तुम गलती करती हो थीसिया। बुझने के पहले दीपक अपनी पूरी शक्ति से जल उठता है। यही हम सैनिकों की हालत हुआ करती है हम अन्तिम समय तक भी कमजोरी नहीं दिखाते। मैं मौत से घबराता नहीं किन्तु......।'

'क्या चाहते हो गोर्की ? मैं तुम्हारे कुछ काम आ सकती हूँ।'

'थीसिया, थीसिया !!' गोर्की की साँस फूलने लगी।

'गोर्की !'

'अभिलाषा है—अन्तिम इच्छा है। तुम रूस का झंडा लेकर देश के नवयुवकों में जागृति की एक आग फूँको और रूस की समस्त विराङ्गनायें तुम्हारे झण्डे के नीचे राष्ट्रीय मोर्चे को मजबूत बनावें........क्या तुम मेरी इस इच्छा को पूर्ण कर सकोगी, थीसिया ?' कहते हुये गोर्की बहुत उत्तेजित हो उठा। घावों से रक्त निरन्तर बह रहा था। और उसका स्वास भी उखड़ने लग गया था।

'ऐसा ही होगा गोर्की। तुम विश्वास रक्खो।'

'ओह, अब मैं शान्ति से मर सकूँगा, थीसिया ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। देश की पुकार सुनो और इस राष्ट्रीय युद्ध कुण्ड में अपनी आहुति दे दो। पीछे न हटो। रूस तुम्हारा बलिदान चाहता है पर निरर्थक नहीं।'

स्वाँस का प्रकोप बहुत बढ़ चला था। गोर्की की स्थिति शोचनीय हो गई किन्तु फिर भी वह अपनी समस्त शक्तियों को लगा कर अन्तिम समय तक बोलता ही रहना चाहता था।

'गोर्की ! क्या तुम मुझे छोड़ कर चले जाओगे—इतना शीघ्र तुम यह नाता तोड़ दोगे ?' थीसिया आशंका से काँप उठी। उसका सर्वस्व लुट रहा था।

'थीसिया ! थी...सि...या !!! गोर्की की जुबान टूटने लगी।'

'गोर्की ! गोर्की क्या तुम सचमुच चले जाओगे।' थीसिया रो पड़ी उसका हृदय वेदना से कराह रहा था।

गोर्की की जुबान लड़खड़ाई और उसने दम तोड़ दिया। सदैव के लिये उसने नाता तोड़ लिया। थीसिया टूटे वृक्ष के समान, चीख मार कर गोर्की के शव पर गिर पड़ी और सब ओर घायल वेदना से कहरा रहे थे।

केश विन्यास

लेखिका, मिस कैरोल केमरन

इस लेख की लेखिका एक अमरीकन महिला हैं। अमरीका की स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाली एक संस्था की सौंदर्य और स्वास्थ्य विभाग की वे डाईरेक्टर हैं। उनका यह लेख उनके गहरे अनुभव का फल है। 'दीदी' की पाठिकाओं से निवेदन है कि वे इस लेख को ध्यान से पढ़ें और इससे लाभ उठावें।

कहते हैं एक समय में स्वीडन की स्त्रियों के बाल बहुत लम्बे होते थे। इसके लिए वहाँ की स्त्रियाँ अपने घरों की छत की धन्नी से एक रस्सी लटकाती थीं और उसमें अपने बालों को एक चोटी में गूँध कर बाँध देती थीं और लटक जाती थीं। ऐसा वे प्रति दिन कुछ घण्टे करती थीं। इस बीच में वे आगन्तुकों से गपशप भी करती थीं और मोजे दस्ताने आदि भी बुनती थीं।

यह बात कहाँ तक ठीक है, यह मैं नहीं जानती। परन्तु इसका एक अर्थ जरूर है। वह यह कि बालों को पकड़ कर खींचा जाय तो वे तेजी से बढ़ते हैं।

यदि आप चाहती हैं कि आपके बाल दृढ़ और लम्बे हों तो कुछ इस प्रकार का प्रयोग आप भी प्रति दिन करें। बालों को धन्नी से बाँध कर तो आप हरगिज न भूलें परन्तु हाँ, एक बात करें। बालों के गुच्छों को हलके हाथों धीरे धीरे खींचे यहाँ तक कि खोपड़ी की त्वचा सजीव सी मालूम पड़ने लगे। इस क्रिया से रक्त खोपड़ी की त्वचा में आ जाता है और निश्चय ही बालों की जड़ों को खुराक मिलती है।

बालों को दीर्घ काल तक चिकना और लम्बा बनाये रखने का दूसरा उपाय है उन पर रोज ब्रुश फेरना। बालों की जड़ों में एक प्रकार का स्वाभाविक तैल होता है। ब्रुश फेरने से वह तैल समस्त बालों में फैल जाता है जिससे उनमें चमक आती है और उनका रूखापन जाता रहता है।

परन्तु क्या आप ठीक रीति से ब्रुश चलाना जानती हैं। सिर पर सौ पचास बार रोज ब्रुश फेरना काफी नहीं है। बालों को गुच्छों में विभक्त कर लो और प्रत्येक गुच्छे पर खोपड़ी की त्वचा से लेकर उसके अन्त तक ब्रुश फेरो। पहले बालों के गुच्छे को एक हाथ से पकड़ लो और दूसरे हाथ से ब्रुश नीचे से ऊपर की ओर ले जाओ। फिर ऊपर से नीचे की ओर ब्रुश चलाओ।

आपके बाल कितने ही छोटे क्यों न हों, आप उन पर ब्रुश फेर सकती हैं। और अगर आपने मेरे बताये अनुसार ब्रुश फेरा तो विश्वास रखें, महीने भर में ही आपका परिश्रम वसूल हो जायगा।

स्त्रियाँ नियम पूर्वक ब्रुश क्यों नहीं फेरतीं। शायद वे इसके लाभ नहीं समझतीं या शायद वे इसे फिजूल समझती हैं। कुछ स्त्रियाँ जिनके बाल झड़ने लगते हैं, ब्रुश से बहुत ही घबराती हैं। वे सोचती हैं, इससे उनके बाल और जल्दी

इसके लाभ नहीं समझतीं या शायद वे इसे फिजूल समझती हैं। कुछ स्त्रियाँ जिनके बाल झड़ने लगते हैं, ब्रुश से बहुत ही घबराती हैं। वे सोचती हैं, इससे उनके बाल और जल्दी झड़ जायँगे। यह भूल है। जो बाल झड़ रहे हों उनको झड़ जाने ही देना ठीक है। ब्रुश न फेरने से उनका झड़ना तो न रुकेगा, हाँ वे स्वस्थ बालों को भी रोगी बना देंगे। लेकिन हाँ, यदि खोपड़ी की त्वचा में फुन्सियाँ हों या चोट लग गई हो तो ब्रुश न फेरना चाहिये।

बालों के लिये हमेशा बढ़िया ब्रुश खरीदना चाहिये। [illegible]म चाहे जो लगे। ब्रुश के बाल कड़े हों और इतने लंबे ह[illegible] त्वचा तक पहुँचें। ब्रुश की बनावट पर उतना ध्यान चाहें न भी दें। मुलायम ब्रुश बेकार होगा। उससे पूरा लाभ नहीं हो सकता। ब्रुश को धूप में सुखा कर शुद्ध कर लो और उसे किसी को उधार मत दो।

खोपड़ी की त्वचा की मालिश भी जरूरी है। बालों के बीच में दसों उँगलियाँ दौड़ा कर खोपड़ी की मालिश करो। ऐसा प्रतिदिन पाँच मिनट करना काफी होगा। मालिश के

कैस्टर आयल का व्यवहार कीजिये

ब्रुश नीचे से ऊपर चलाइये।

समय अँगुलियों को जैतून के तैल(ओलिव आयल) में डुबा लिया करो तो बहुत लाभ होगा।

फिर बालों का धोना भी जरूरी है। कुछ स्त्रियाँ अपने बाल १०वें या १५वें दिन धोती हैं। बालों को आप चाहे रोज ही धोवें। ध्यान देने की बात यह है कि धोने के बाद बाल तुरन्त सुखा लिये जायँ और उनकी जड़ में कहीं साबुन लगा न रह जाय।

मानव शरीर में बाल ही सबसे अधिक मैल पकड़नेवाले हैं। अतएव उन्हें हफ्ते में एक बार तो जरूर ही साबुन से धोना चाहिये। गर्मियों के दिनों में आप दूसरे तीसरे दिन भी धो सकती हैं।

होलीउड में एक बाल सँवारने की दूकान है। वहाँ फिल्मों की तारिकाओं के बाल नाखून से बने ब्रुशों से सँवारे जाते हैं। इससे खोपड़ी की त्वचा सर्वदा स्वच्छ हो जाती है। आप फिल्म की स्टार न हों तो भी इस ब्रुश का प्रयोग करें।

प्रयोग से कैस्टर आयल बालों के लिये बहुत उपयोगी

गर्मियों में सिर से पानी डाल कर स्नान कीजिये

सिद्ध हुआ है। इसे स्नान से पहले लगाएँ। हो सके तो रात में सोने से पहले लगाएँ। तकिये पर कोई तौलिया रख लें जिससे वह खराब न हो।

यदि आपके बाल झड़ने लगें, सूखे दिखें, बढ़ें न तो इस सबका एक ही कारण समझें। आपका स्वास्थ्य गिर रहा है। उसे सुधारें। यदि आप पूरी नींद नहीं सोती हैं तो इसका आपके बालों पर असर पड़ सकता है। यदि आप अपने घर में लड़ती झगड़ती हैं तो उससे भी बाल बुरे हो सकते हैं। अच्छे बालों के लिये शरीर का पूर्ण स्वस्थ रखना और मन को पूर्ण प्रसन्न रखना जरूरी है।

यह याद रखें कि सुन्दर चमकीले बाल आपके शरीर के आन्तरिक स्वास्थ्य के चिह्न हैं। अतएव यदि आपके बालों में कोई दोष पैदा हो तो उसका उपाय बाजार में बिकने वाले तैलों आदि में न ढूढ़ें बल्कि अपने शरीर के अन्दर खोजें। हरे शाक, ताजे फल और पौष्टिक भोजन करें। पानी अधिक मात्रा में पिएँ, निश्चय ही आपको लाभ होगा।

——

पाठिकाओं की टिप्पणियाँ

मेरे सामने कुछ बहनों ने एक समस्या रक्खी है। वह यह है कि—कुछ बहिनें तो ऐसी हैं जो कि काफी ऊँची योग्यता रखती है, ऊँची शिक्षा पाये हुये हैं। उन बहिनों को यदि आर्थिक तंगी होती है या पति द्वारा उनका भरण पोषण उचित रीति से नहीं हो पाता तो वह तुरन्त ही कि[illegible] अच्छी नौकरी से लग कर अपनी गुत्थी को सुलझा [illegible] है। और कुछ बहिनें जो निम्न श्रेणी की हैं वह तो खुले आम मेहनत मजदूरी करके कमाती ही हैं। वह बहिनें तो बराबर ही अपने पति का हाथ बँटा कर काफी आमदनी कर लेती हैं। समस्या है—बीच की स्थिति की बहिनों की, जो कि दुर्भाग्य से पढ़ी लिखी तो हैं नहीं। न ही इतना सीना पिरोना तथा कसीदा इत्यादि ही जानती हैं जो उससे कुछ कमा-धमा सकें। न ही मेहनत मजदूरी कर सकती हैं क्योंकि बहुत सी कुलीन घरानों की होती हैं किन्तु ऐसा होते हुये भी पति द्वारा या परिजनों द्वारा धन का अभाव उन्हें तथा उनके बच्चों की शिक्षा के बीच बाधक हो उठता है। वह बहिनें अपने पैरों पर खड़ी होकर खुद कमाना चाहती हैं किन्तु पढ़ी लिखी न होने से बेचारी बेबस हैं। और यह कठिन ही नहीं वरन असम्भव है कि पहले वह शिक्षा प्राप्त करें फिर अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने बच्चों को शिक्षा दिलायें, क्योंकि कई कई बच्चों की माँ होकर फिर से पढ़ना जरा कठिन सा प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में वह बहिनें किस प्रकार अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हैं?

मैं दो एक ऐसी बहिनों को जानती हूँ। जो काफी रईस घराने की होते हुये भी विशेष रूप से पढ़ी लिखी नहीं हैं और सौभाग्यवती होते हुये भी उनके पति उन्हें यथोचित धन नहीं देते न ही उचित रूप में उनके बच्चों को ही पढ़ाने लिखाने की व्यवस्था करते हैं। बेचारी सदा धन के अभाव से दुःखित रहती हैं। चाहती हैं अपने ही आप कुछ करें किन्तु योग्यता नहीं!

—सुशीला मिश्रा, देहरादून

——

सती की जीत

लेखक, श्री श्यामबदन पाठक 'श्याम'

(१)

एक समय वह था कि जिस दिन मैं दिनेश के गले लिपट, उससे दो चार बातें न कर लेता, मेरे पेट में खाना नहीं पचता था; जिस दिन, स्कूल में उसे न देखता, किताबों की तरफ भूल कर भी न देखता था; अगर किसी दिन, उसे उदास देख लेता, मैं कितना दुःखी होता था, नहीं कह सकता। हम दोनों सहपाठी, स्कूल से निकलने के बाद, कालेज में प्रवेश किये। बी॰ ए॰ कर लेने के बाद, साथ ही साथ एक ही दफ़्तर में नियुक्त हो गये। भाग्य से, हम दोनों की घनिष्टता बढ़ती ही गई; साथ बना ही रहा। पर इधर दो सालों से, मुझमें और उसमें उतनी ही शत्रुता है, जितनी कि बेर के काटों और केले के पत्तों में होती है। मैं उसे फूटी आखों नहीं देखना चाहता; उससे घृणा करता हूँ।

आज, जब स्वर्णलता के मुरझाये हुये, चेहरे की याद आती है, तो मुझे उतना ही दुःख होता है, जितना कि मेरी एक मात्र प्यारी बहन सरला की मृत्यु से हुआ था। सरला की मृत्यु के बाद, जब कभी 'भैया दुइज' का त्योहार आता, मैं अज्ञान बालक की भाँति, घर के किसी कोने में बैठ, फूट फूट कर घण्टों रोता। मेरे दिल में, बार बार यही प्रश्न कसक उठते थे — अब मुझे राखी कौन बाँधेगा; मुझे 'भैया' कह कर कौन बुलायेगा! माँ मुझे गोदी में बिठा मेरे सिर के बालों पर प्यार से हाथ फेरती मुझे समझाती— बेटे! ईश्वर के आगे मनुष्य का क्या बस है, वह भी रोते रोते विह्वल हो उठतीं। मेरे आँसू पोंछने लगतीं। आगे चल कर, न जाने, मेरी क्या दशा होती, पर मुझे मेरी सरला कुछ ही दिनों बाद मिल गयी — दूसरे रूप में। अब उसका नाम था—स्वर्णलता। मुझे अच्छी तरह याद है, सरला का रूप रङ्ग, चाल, ढाल सब ऐसा ही था। मुझे, दोनों में लेश मात्र भी अन्तर नहीं मालूम पड़ता था। इसी कारण, लता को मैं सरला से भी अधिक मानता था, क्योंकि वह खो कर फिर से मिली थी। लता का घर मेरे पड़ोस ही में था। हम दोनों के घरों में बहुत पहले ही से मित्रता चली आ रही थी। आज उसका घर मेरा और मेरा घर उसका था — वह मेरी सरला और मैं उसका कुमार था। भाई के नाते, मैं उस पर अपना बहुत कुछ हक समझता था। मैं हर तरह से प्रयत्न करता था कि लता गुणवान हो; किसी गुण में किसी से पीछे न हो। उसे मैं स्वयं पढ़ाता था; स्कूल में भी भर्ती करवा दिया था। भगवान की दया थी; लता ने स्कूल में अच्छा नाम कर रक्खा था। मैं प्रसन्न था।

दिन बीते, लता बड़ी हुई। दसवीं भी पास कर ली; अब उसके विवाह की चर्चा चली—बूढ़े बड़ों की राय थी— चाहे लड़का कम हो पढ़ा लिखा हो, कम ही सुन्दर हो; उसके घर में अधिक लोग और कुछ रुखे स्वभाव के हों; पर घर धनी होना चाहिये ताकि लड़की को दो रोटी के लाले न पड़ें। यद्यपि मैं अपने बड़ों के आगे कभी नहीं बोलता था, लेकिन यहाँ पर मैं चुप न रहा, क्योंकि लता को मैं सबसे अधिक प्यार करता था। मेरा कहना था — चाहे कुछ हो या न हो—लड़का सुशिक्षित, सज्जन, सुन्दर और शरीर से हृष्ट-पुष्ट अवश्य होना चाहिये। स्त्री का धन 'पति' है। यदि स्त्री 'पति-धन' से धनी है, तो संसार में उसे कभी भी किसी प्रकार की कमी नहीं पड़ सकती। और सब बातों का ध्यान रखते हुये, मैंने दिनेश को चुना। लता दिनेश को और दिनेश लता को जानते और समझते थे। मेरी ही बात रही—शुभ तिथि, शुभ लगन में, धूम-धाम से लता की शादी दिनेश के साथ हो गई। मुझे पूर्ण विश्वास था कि दिनेश के हाथ में लता मुरझायेगी नहीं; सदैव हरी भरी रह कर फूले फलेगी।

लता की बिदाई के कुछ ही दिनों बाद, मैं उसको देखने के लिये गया। ओह! मैं उसको देख कर आश्चर्य में पड़ गया, कठिनता से पहिचान सका—वह हरी, भरी, कमल की भाँति खिली लता, टूटी हुई कली के समान मुरझाई पड़ी है। चेहरे पर न वह रौनक, होठों पर न वह

हँसी। मुझे देखते ही वह मेरे पैर पकड़, मैया''मैया''कह कर रोने लगी—उस समय मेरे ऊपर क्या बीत रहा था, बस! मैं ही जानता हूँ। वही पहला दिन था कि मुझे दिनेश पर क्रोध चढ़ा! मैंने उस पर विश्वास किया, पर उसने, मेरे साथ विश्वासघात किया। मित्रता का बदला शत्रुता के रूप में चुकाया। मुझे अपनी भूल पकड़ने में देर न लगी मैंने दिनेश के बाह्य-रूप पर लता के जीवन का फैसला किया; उसके अन्तरात्मा को न पहिचाना। लता दुखी थी, सका कारण मैं था। मेरे ही हठ से वह दिनेश के हाथों में पड़ी। उसने उस सती के हृदय के मान की रक्षा न की। ओह! मेरे ऊपर तानों की बौछार पड़ेगी। मैं रोता हुआ, वहाँ से लौट पड़ा। दो साल बीत चले, फिर लता को देखने न गया, न उसके दुःख-भरे पत्रों का उत्तर ही दिया। घर बैठा बैठा अपनी करनी पर रोता रहता। मेरी दशा बहुत कुछ गिर चुकी थी। कभी कभी ऐसा मन में आता था कि दिनेश को जान से खत्म कर दूँ, फिर अपना भी अन्त कर डालूँ। पर उसी समय—कोई बोल उठता—इससे शायद तुम्हारा कलेजा भले ही शान्त हो जाय, पर लता का रहा सहा आधार भी धूल में मिल जायगा, उसका सुहाग, सदैव के लिये मिट जायगा। मैं चुप लगा जाता। लता का सच्चा भाई होने का मैं, दावा करता—उसे प्यार करता था—उसका उपकार मैंने यह दिया आज वह दुःखों से घिरी रो रही थी—इसी लाज के बोझ से मैं बीमार पड़ गया—दफ़्तर से एक साल की छुट्टी लेनी पड़ी।

मेरी छुट्टी के दिन भी बीत चले, पर मेरी दशा में कुछ सुधार न हुआ। लता के दुःखी जीवन ने मुझे चैन न लेने दिया। रोज की भाँति मैं बैठ कर, उन्हीं दुःख-उलझनों में डूब उतरा रहा था, एक टमटम खड़खड़ाती मेरे दरवाजे के सामने आ लगी—दिनेश और लता, उतर मेरे सामने खड़े हो गये। आह! आज मैं तीन सालों की लम्बी, दुःखदायी अवधि के बाद यकायक दिल खोल कर हँस पड़ा—दोनों को लपक कर गले से लगा लिया। दिनेश, शत्रु नहीं, मेरा सच्चा मित्र था मेरी लता पहले से भी अधिक हरी, भरी और सुखी थी। यद्यपि वह मेरी दशा पर रो पड़ी, पर मैं उसकी दशा पर हँस पड़ा। उसके नेत्रों में आँसू थे दुःख के—मेरे लिये; लेकिन मेरे आँसू थे सुख के—उसके लिये। लता को मैं, मन-चाही अवस्था में देख कितना प्रसन्न था—जितना कि अंधा आँखें पाकर और गूँगा वाणी पाकर होता है। दुःख के बाद सुख कितना प्यारा होता है, उसी दिन मेरे हृदय ने अनुभव किया। मैं अब रोग मुक्त चिन्ता-रहित और सच्चा सुखी था; मुझे ईश्वर का एक अनुपम वरदान मिला था। फिर भी मुझे एक बात जानने की प्रबल इच्छा थी कि दिनेश के जीवन में इतना बड़ा परिवर्तन, इतना बड़ा सुधार कैसे हुआ। एक दिन मैंने सुअवसर देख उससे पूछ ही डाला। पहले तो वह झिझका—शायद अपने पूर्व कुत्सित कामों को फिर से सामने लाना नहीं चाहता था। अन्त में, मेरे हठ से विवश हो, कहना आ[illegible] किया—स्पष्ट शब्दों में; हिचकिचाहट नाम मात्र [illegible] भी न थी।

'यह बात बिलकुल सत्य है कि जब आदमी के बुरे दिन आते हैं तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। मुझे बुरे दिन देखने थे, मैं पाप-पथ पर बढ़ता चला जा रहा था—उसी पर मुझे सुख और प्रसन्नता थी। आप ऐसे प्रगाढ़ मित्रों ने मुझे सभ्य समझ कर मेरा प्यार और मुझ पर विश्वास किया। मुझे, मेरे भले की बातें समझाईं, पर मैंने किसी की एक न सुनी। अच्छी मन्त्रणायें बुरी और बुरी, अच्छी लगीं; अपने पराये और पराये अपने जँचे। इसी कारण, कुत्सित कर्मों में और भी फँसता गया, बुद्धि इतनी चौपट हो गई कि मुझे भले, बुरे का ज्ञान ही न रहा। अपनी सुन्दर, पवित्र वस्तु, कड़ुवी और पराई विषैली, दिखावटी नीरस वस्तु मधुर लगी। मौका पाते ही पाशविक वृत्तियाँ सिर पर सवार हो जातीं, मैं घर से बाहर निकल, किसी गर्ल्स स्कूल के फाटक पर जम जाता; गलियों में चक्कर लगाता अगल बगल, ऊपर-नीचे चकमका कर निहारता। प्रत्येक क्षण यही चाह रहती, कहीं कोई युवती सजधज कर निकले और मैं इन पापी आँखों से घूर घूर कर उसे देखूँ। कहीं कोई धोखे से या अचानक मेरी ओर देख लेती—मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहता। दूसरे दिन अधिक ठन-बन कर फिर वहीं जा पहुँचता। ओह! यहाँ तक मेरी आदत बिगड़ी कि सड़क पर जाते हुये, किसी को कोठे पर देख लिया, उधर ऐसी आँखें गड़ाईं कि सामने मोटर से दबते दबते, खम्भे से टकराते टकराते बचा। देखने वाले, ठहाका

मार कर हँस पड़ते—उस दिन प्रतिज्ञा करता, फिर ऐसा न करूँगा, पर, दूसरे दिन फिर वही हाल। मुझे अपनी कमजोरियों पर पश्चाताप भी तो नहीं था—नहीं तो इतना न गिरता। पाप ही में सुख था—भविष्य का कुछ भी ध्यान न था।

एक दिन शाम को घूमते-घामते, कालेज घाट पर, गंगा जी के किनारे जा पहुँचा। बहुत से लोग, उस समय, सामने उछलती, खेलती धवल लहरों का तथा उन पर से थिरकते मन्द मन्द समीर का सुख ले रहे थे—मैं आँखें फाड़ फाड़ कर बायें, दायें बँगलों की ओर झाँक रहा था। सहसा मेरी [illegible]ष्टि, हरे हरे वृक्षों और उनके बीच घनी लिपटी लताओं की [illegible]ट में से निकल उस पार जा पहुँची। मैं खुशी से बो[illegible] ऊपर उछल पड़ा। विचित्र दृश्य था। रङ्ग, विरङ्ग के मनोहर फूल मद से झूम रहे हैं। उनके घेरे में हरी घासों का एक रमणीक फर्श पड़ा हुआ है, जिस पर एक रमणी, दूध से भी स्वच्छ साड़ी धारण किये, एक टक मेरी तरफ देख रही है। पहले दिन तो निकट जाने का साहस न हुआ। मैं बहुत देर तक वहाँ खड़ा रहा, वह भी खड़ी रही। अँधेरा हो गया, घर को लौट पड़ा। जीवन में यह पहला अवसर था कि मुझे इस बात पर विश्वास हुआ कि औरतें भी पुरुष के रूप पर मरा करती हैं—आज वह मेरे रूप पर मर रही थी। रात भर नींद न आई। किसी तरह दिन बीता, सन्ध्या आई, फिर वहीं जा पहुँचा। सर्वदा उसे वहीं और उसी रूप में पाया। अब उसके प्रेम पर मुझे बिलकुल संदेह न रहा। मैंने दूसरे दिन उससे साक्षात् करने का प्रण किया—नहीं तो वह मेरे प्रति अपने दिल में क्या ख्याल करेगी। वह मेरी प्रतीक्षा में घण्टों खड़ी रहती है मैं उससे प्यार की दो बातें भी नहीं करता। दूसरे दिन रात्रि को, जब कि चाँदनी, स्वतन्त्र रूप से उस फर्श पर बिखर रही थी, समीर भी मस्ती में डोल रहा था, मैं जल्दी और घबराहट में किसी प्रकार काँटेदार तारों को लाँघ कर उस युवती के पास जा पहुँचा, जो उतनी रात्रि को भी मेरे लिये खड़ी थी। ओह! उस समय मैं पाप से अन्धा था; निकट पहुँच कर भी मुझे न सूझा। देखा, बस अपनी प्रेम-पुजारिन को। दोनों भुजायें फैला दी आगे को, बेहोशी में उसे लिपटा भी लिया। मेरी आँखें सहसा चमक उठीं—गालों पर किसी अज्ञात शक्ति ने जोर के तमाचे लगाये—चैतन्यता लौट आई—'मेरी गोद में सुन्दरी नहीं, पत्थर का एक पतला खम्भा था, जिस पर गहरी चूनाकली हुई थी।' माथा ठोंक कर वहीं गिर पड़ा। आँखें किधर को फेरूँ, कान कहाँ ले जाऊँ, ऊपर चाँद और तारे, नीचे पृथ्वी, इधर-उधर दिशायें ठहठहा कर मुझ पर हँस रही थीं। मेरी आत्मा भी मुझे कोस रही थी—पापी! एक सती को ठुकराने से यही मिला करता है—पत्थर। पतित! निर्मल, पवित्र जल को छोड़, ओस की बूँदों से अपने हृदय की प्यास बुझाना चाहता है। नीच! अब भी चेत, जिसे तूने रुलाया, ठुकराया, जिसे सुखा कर काँटा बना डाला, आज भी वह तेरे स्वागत के लिये अपना हृदय फैलाये, अपना अञ्चल बिछाये, दरवाजे पर तेरी प्रतीक्षा कर रही है। मूर्ख! नहीं जानता, उसी के सुख में तेरा सुख और उसी के जीवन में तेरा जीवन है। अनाधिकार प्रलोभन में, बाहरी सौंदर्यताओं के भीर यही मिलता है, जिसे तूने अभी लिपटाया था। मैं आँसू पोंछता घर भगा। दरवाजे पर खड़ी लता को गले से लिपटा, जी भर रोया। लता आश्चर्य में पड़ गई। मैंने शुरू से आखीर तक सारा किस्सा कह सुनाया। वहीं, दफ़्तर से एक साल की छुट्टी ले कर घर चला आया। फिर कभी भूल कर भी किसी पाप-पथ पर पैर न रक्खा। मुझे प्रत्येक क्षण याद था—संसार में सिवा लता के और किसी से भी मुझे प्रेम करने का अधिकार नहीं है। वही मेरा सुख निधि है। हम दोनों प्रसन्न और सुखी हैं। वह चुप हो गया। मुझे खबर भी नहीं। मैं दूसरे ही ध्यान में मग्न था—ओह! एक सती-की शक्ति कितनी प्रबल है! लता ने दिनेश को उबार लिया।

कुछ गुप्त स्याहियाँ

काली—फिटकड़ी के चूर्ण को नींबू के रस में घोलकर लिखो और सुखा लो, इस कागज को पानी में डुबाने से काले अक्षर दिखलाई पड़ेगें।

पीली—नीला थोथा और नौसादर घोल कर लिखो और कागज को अग्नि का ताव देवो तो पीले अक्षर दिखलाई पड़ेंगे।

—भानुमती देवी

एक रोचक कहानी

भाई मक्खीचूस का प्यार

लेखिका, श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए० बी० टी०, अलवर

(१)

अशोक गरीबी में पैदा हुआ था; गरीबी में पला था; न जाने कब और कैसे पढ़ा था। और होते होते वह कहीं किसी दफ़्र में क्लर्क भी हो गया था; हम उसकी बचपन की दशा का तो अधिक कह ही नहीं सकते, बस यह ही जानते हैं कि वह एक दुबला पतला आदमी था पुराना सा सूट पहने अधिकतर शाम को ट्रेन से दादर लौटता था, आयु उसकी कोई ३५ की होगी। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वह कंजूस कितना था। माना कि वह ५०) मास ही कमाता था, पर ताे भी एक मनुष्य के लिये तो इतना धन पर्याप्त था, समय भी आज कल की मँहगी का न था। पर हाल यह कि अगर पड़ोसी कह दे कि गोश्त तुम्हारे चार आने सेर आता है, मैं तो तीन ही आने सेर लाया तो प्रसन्न व क्रुद्ध साथ साथ होता। प्रसन्न कि भविष्य में दाम बचेंगे। क्रुद्ध कि आज तक न मालूम कितने पैसे नायन (बर्तन माँजने वाली कहारी) खा गई मेरे। यह भी न पूछते या सोचते कि गोश्त छिछड़ों से भरा ही हो। सड़ा बुरा ही सही इससे क्या सस्ता था। वह इतना नादान इतना बुद्धिहीन न था कि चाय में जरा सी नाचीज मक्खी गिर जाने पर चाय उठा कर फेंक दे। मक्खी न ही चूसी यही क्या कम है ? आश्चर्य होगा पर इसीलिये उसने विवाह भी न किया था। कई बार ऐसा ध्यान आने पर उसने अपने मन को रोक लिया था। 'ना भाई यह रोग मेरे बस का नहीं, उन्हें खुश रखने के आज यह साड़ी कल वह झुमके परसों वह चूड़ी। इतना रुपया क्यों बरबाद करो। चालीसवीं वर्षगाँठ की लोग बार बार मुँह मीठा करने को कहते थे पर सुनता कौन ? चार बजे उसी दिन एक दफ्तर का दूसरा क्लर्क या कहिये हेड क्लर्क घर पर मिलने आया और कहने लगा -मार दिया उस्ताद तुम तो आज बेहद (हैन्डसम) सुन्दर जँच रहे हो। आज चालीस के हुये हैं ? यही उम्र है ठीक हाथ मारने की। न बहुत छिछोरी लड़की मिलेगी जो बार बार फरमाइश करे न बहुत बुढ़िया जो कड़वी बात करे। बीच की बढ़िया चीज जो तुम्हारी ही उम्र की होगी रुपये वाली एक एक को जाँच चुकी होगी। इसाई हिन्दू मुसलमान का क्या ! हैं ठीक न है ?

(२)

उस दिन उस हेड क्लर्क को चाय बिस्कुट मिले। दिल में अशोक के नई बात आ चुकी थी। क्या ऐसा भी सम्भ[illegible] है क्यों नहीं ? कभी कभी हो ही जाता है। और उसी [illegible] वह अखबार खरीदने सड़क पर निकला। सोचा [illegible] मुझे अखबार उधार लेने की जरूरत न रहेगी। आज [illegible] खुश थे कि पैसे खर्चने निकले।

'ओ छोकरे अखबार !'

छोकरे ने दौड़ कर अखबार दिया।

'अरे कोई दो पैसे वाला नहीं है ?'

छोकरे ने आश्चर्य की निगाह से देख कर उर्दू का छोटा सा पकड़ा दिया। अशोक के मुड़ने पर नफरत भरी निगाह फेंकी। 'हैं ऐसे बाबू फिर ऐसी बात।' कमीना घर आ कर अखबार उठाया कि शादी का कालम देखें कोई हमारे लायक हो।

'सारा देख लिया कुछ काम का नहीं उफ दो पैसे बरबाद किये।'

इतने में नजर गई 'दान' देने वालों के नाम व तस्वीरों की ओर। पहला तो बेकार दूसरा मुँह मुस्करा रहा था आयु भी ३५ की रही होगी और ५०००) दान दिया था किसी हास्पिटल में।

'वाह वाह यही काम की है मार दिया हाथ। कल से जान पहिचान करें, धीरे धीरे बढ़ेगी। असली दशा थोड़ी बताऊँगा। यहाँ तक कि उसके लिये कई तोफे खरीदूँगा। बहुत मँहगे नहीं पर हाँ खूबसूरत जो वह पाकर खुश हो। ढूँढ़ ढूँढ़ कर खरीदूँगा। यह अशोक ने एक मिनट भी न सोचा कि यह अभी तक 'मिस जोजफ' क्यों हैं। ईसाई हैं तो क्या। अशोक का सा क्या मिला ही न था। अशोक

ने सोचा भी होगा तो यही कि मुझ 'सा न मिला होगा। अपने आपको सब अच्छा जो समझते हैं।'

अगले दिन शनीचर था, फोन करा उस होटल में कि क्या मिस जोजफ तुम्हारे यहाँ ठहरी हैं ? जवाब में 'हाँ,' सुना तो जान में जान आई।

मिलने गये, बहुत आदर से मिले। हाथ मिलाया, मीठी बातें की और मिस जोजफ भी बहुत खुश दिखीं। कुछ इनमें ऐसा उस समय रहा होगा।

'मिस जोजफ' थीं भी काफी सुन्दर। अशोक की तो पाँचों अँगुली घी में थीं। सुन्दर मुख पर सदा मुस्कान रहती [illegible]र सबसे प्रसन्नता की बात तो थी उनकी अमीरी।

[illegible] बढ़ते बढ़ते बात बहुत बढ़ी। जैसा कि ऐसी बातों का द[illegible] है। अशोक की ओर बढ़ी तो ठीक पर दूसरी ओर से भी [illegible]मी न थी। हवाई सैर साथ साथ करी, होटल ताज महल [illegible] तो नहीं, पर हाँ काफी ठीक में कई बार चाय पी गई। सब बिल अशोक ने चुकाये, चाहे मिस जोजफ ने बहुत ही जिद करी पर अशोक ने एक न सुनी टाल दिया, पर दिल ने कहा अभी नहीं पीछे तुम ही चुकाना। अपने घर का पता तक न दिया था कि कलई खुलेगी तो न दीदे से शादी कब करेगी। वही टैक्सी पर आते। होटल से फिर तो मिस जोजफ की कार थी ही। महीना समाप्त हुआ। पोस्ट आफिस की किताब ने बोलना शुरू नहीं मेरा मतलब टर्राना शुरू किया। समय आ गया था सो एक दिन अशोक ने कह ही डाला जो कुछ भी कहने को था।

मिस जोजफ की आँखें उठी पूछा—'सच मुझे प्यार करते हो, या मेरे रुपये को, आँखों से आँखें उलझ रही थीं ऐसे समय झूठ बोलना कैसा कठिन था, झूठ भी एकदम सफेद वह भो मिस जोजफ से जो न मालूम कितनों से यह प्रश्न कर चुकी होगी। कलेजा धक से हो गया। मुँह को आने लगा, पर सँभल कर। तुमसे ही सच तुम्हारी कसम। सब तय हो गया, चुपचाप बगैर धूम के शादी हुई, ऊपर से तो यह कहा कि दो मत के हैं। हम चुपचाप गिर्जा घर में कर लें वरना मेरे रिश्तेदार तूफान ला देंगे। पर दिल कहता था अपना रुपया अब रहा कितना सा जो उसको भी बिगाड़ो अभी तो बहुत दिन चलाना है। ढोंग भी तो रखना पड़ेगा, इज्जत बनी दिखानी है। फिर चुपचाप कहीं जा कर रह जायँगे। यह खर्चेगी मैं खाऊँगा मौज उड़ाऊँगा। धीरे धीरे कलई खोलूँगा, यह थोड़ी कि रुपये के लिये शादी की। यह कि रुपये डूब गये हिस्से में हानि हुई यह हुआ वह हुआ जैसे बुद्धिमान मनुष्य कहता है या कह सकता है।

शादी को महीना भर हो गया। घर पर थोड़ी ही रहे कलई खुल जाती सो सीधे गिर्जा घर से ट्रेन में बैठ न जाने कहाँ चल दिये चुपचाप।

अब लौटने का समय निकट आ रहा था। सोचा असलियत कह ही डालूँ, सो बोले मुँह लम्बा किये—प्रेयसी मुझे बेहद दुख है मैंने तुम्हें दुख में खींच लिया।

'कैसा दुख।'

यही कि मेरी तो नौकरी भी जाती रही और तमाम हानि भी मेरे ही सिर पड़ी। कलकत्ते में जूट मिल में शेयर थे सो यह देखो। मेरी किसमत फूट गई।

'ऐसा क्यों कहते हो। मैं जानती हूँ तुम कुछ न कुछ करके रहोगे। जो ईश्वर करता है भले के लिये तुम पर मुझे पूरा विश्वास है, तुम दूकान ही खोल लोगे तो········।'

'ठीक पर लोग कहेंगे बीबी के रुपये पर बैठा है। खाने को भी तुम दोगी, मैं किसी भी काबिल न रहा। हाय मैं नहीं चाहता था कि तुम्हारे रुपये पर रहूँ। पर वही होगा।' लोग कहेंगे इसीलिये शादी करी थी।

'कैसा रुपया मेरा ? तुम्हारा क्या बक रहे हो।'

'तुम्हारा रुपया तुम्हारा ही है। नहीं नहीं मैं यह न होने दूँगा, तुम्हारा दिल अच्छा है अपना पराया नहीं रखतीं पर लोग क्या कहेंगे।'

'क्या कहेंगे मेरे कुछ समझ में नहीं आता ?'

झुँझलाते हुये – तुमसे शादी करी तुम्हारा रुपया ऐंठने को।

'मेरे पास। मेरे पास तो रुपया नहीं हैं, थोड़े से रुपये बटुये में हैं वही मेरे हैं। सब शादी से पहले लगा दिये।'

'पर वह तस्वीर तुम्हारी उर्दू अखबार में थी ५०००) रुपया तो दान ही दिया था। इस वक्त मजाक करना कैसा ?'

'अरे हाँ वह अखबार वाले की गड़बड़ थी। एक सड़ा सा अखबार था उसमें गड़बड़ छप गई थी मैंने तो कुल ५०) दिये थे वह भी इसी लिये कि कुछ नाम हो। मैं शादी करना चाहती थी किसी तरह तो कोई फन्दे में·····।'

'फँसे ! तो क्या सचमुच तुम्हारे पास······।'

'सचमुच वह दूसरी कोई थीं लेडी श्रीवास्तव या कुछ ऐसी ही।' तस्वीर मेरी उनके दान के साथ छप गई। ऐसी गलती सड़े अखबार वाले कर ही देते हैं।

अशोक दिल में सोच रहा था—'हाय मेरा सारा पास-बुक का रुपया!' उसका प्रेम न जाने कहाँ गया वह घृणा की दृष्टि गड़ाये था।

——

? प्रश्न-पिटारी ?

गर्भिणी को उल्टी

प्रश्न—मुझे आज करीब डेढ़ महीने का गर्भ है। लेकिन तकलीफ बहुत ज्यादा है। कुछ खाया नहीं जाता। जो कुछ खाती हूँ तुरन्त उलटी हो जाती है। और गला जलता ऐसा रहता है जैसे खाना हजम ही नहीं हुआ है। इसका अच्छा इलाज हो तो बतलाना यह ख्याल रखते हुये कि गर्भ को कोई नुकसान न हो बल्कि फायदा ही हो?

उत्तर—गर्भिणी को उल्टी क्यों होती है यह समझ लिया जाय तो बहुत कुछ परेशानी दूर हो जाय। गर्भ में जब शिशु की रचना शुरू होती है तब माता के शरीर में जो क्षार पदार्थ (चूना लवण आदि) रहता है वह अधिक मात्रा में व्यय होने लगता है और खटाई (एसिडिटी) बढ़ जाती है जिससे जी मिचलाता है और उल्टी होती है। यदि गर्भिणी ऐसी चीजें अधिक खायँ जो शरीर में जाकर क्षार पैदा करें तो उल्टी न हो, जैसे नींबू, मूली, लौकी, पालक, चौराई, परवल, आदि। तेल, खटाई, चावल, मैदा आदि उलटी बढ़ाते हैं अतएव ऐसी चीजों का सेवन बन्द कर देना चाहिये। आप यदि प्रतिदिन एक चुटकी सोडाबाई कार पानी के घूँट खा लिया करें तो बहुत लाभ हो क्योंकि यह एक क्षार ही है और इससे कोई हानि नहीं पहुँचती। सौंफ का शरबत या शरबत में नींबू निचोड़ कर पीना भी लाभदायक है।

मुँह पर काले तिल

प्रश्न—मेरी एक मौसी हैं। उनकी उम्र ३५ के लगभग है। उनके मुँह पर कई साल से काले काले तिल निकलने आरम्भ हुये हैं। कोई उपाय बतावें। उत्तर के वास्ते लिफाफा रख रही हूँ।

उत्तर—इसका कारण एक प्रकार का रक्तदोष है जो चेहरे की त्वचा में प्रकट होता है। भोजन में ऐसी चीजों का प्रयोग बढ़ाने से जिनमें क्षार (Alkali) ज्यादा हो यह अच्छा हो जाता है। वे प्रतिदिन एक चुटकी सोडा बाईकार खाएँ तो सम्भव है १०-१५ दिन में कुछ लाभ दीखे यदि लाभ न जान पड़े तो मुझे फिर लिखें।

छोटा कद

प्रश्न—मेरा कद छोटा है, बड़ी साड़ी अ[illegible] तरह नहीं पहन सकती। कोई लम्बी होने का उपाय हो [illegible] बतावें।

उत्तर—अपने कद के अनुसार छोटी साड़ी पहनें। पर उसे बदन में इस तरह लपेटें कि आप पतली और लम्बी दिखें। बालों की लम्बी चोटियों में गूँथें और उन्हें सामने की ओर आने दें। इस तरह आप लम्बी दिखेंगी।

चमड़े का रूखापन

प्रश्न—मैं पूर्ण स्वस्थ्य हूँ और खाना भी शक्ति-वर्द्धक करती हूँ परन्तु यहाँ की जलवायु सूखी होने के कारण मेरी चमड़ी बड़ी रूखी रहती है। मुझे पाउडर व क्रीम में विश्वास नहीं है। आप कृपया कोई ऐसा उपाय बतावें जिससे मेरी चमड़ी का रूखापन चला जावे।

उत्तर—मानव शरीर की चमड़ी का रूखापन बहुत कुछ आन्तिरिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। आप पानी खूब पिएँ और शीघ्र हजम होने वाले हल्के पदार्थ खाएँ। हरे शाक और ताजे फल काफी मात्रा में खाएँ। इतना काफी होगा। पर यदि आपको उबटन का शौक ही हो तो चिरौंजी और सरसों समभाग लेकर उसे सिल पर महीन पीस कर उपटन लगावें। इससे आपको आश्चर्य जनक लाभ होगा। स्नान के पानी में थोड़ा यू डी क्लोन डाल लिया करें। इससे ताजगी मालूम पड़ेगी और त्वचा में चिकनाहट आवेगी।

——

गहनों का शौक

बीस वर्ष से मुझे निकट से देखने वाले भाई बहन कल्पना भी नहीं कर सकेंगे कि कभी मुझे गहनों का शौक भी रहा होगा। अपने बचपन की इस घटना को लिखते मुझे आनन्द और कौतुक होता है। अपने जीवन [illegible] चार वर्षों में (१४ वर्ष की उम्र तक) जेवर पहनने की ती[illegible] इच्छा ने मुझे सताया। मेरी पर दादी जब मेरी तरफ इशा[illegible] करके मेरे पिता जी से कहतीं कि "लाली अब स्यानी हो ग[illegible]। इसके पैर गहना माँगते हैं, कुछ बनवादे।" तो मेरे [illegible] में एक तरह गुदगुदी होती थी और चाहती थी कि पिता जी मेरे लायक छोटे छोटे नये गहने बनवा दे तो मैं पहनूँ, परन्तु मेरे प्यारे पिता जी बिटिया को पढ़ाने के पक्ष में थे, शिक्षा के साथ गहनों का मेल उन्हें कभी पसन्द नहीं रहा है, इसलिये दादी का कहा अनसुना रह जाता था। जेवर पहनने की तीव्र इच्छा मौजूद थी उसकी पूर्ति कैसे हो ? आखिर उसकी तृप्ति करना तो अनिवार्य था ही, पैरों के जेवर अम्मा के लली, उनको पैर के अँगूठे में डोरे डाल कर सँभालती, गले और हाथ के जेवर पहनने में खास दिक्कत नहीं पड़ती, कान के भी भारी भारी जेवर पहनती।

एक बार ऐसा हुआ। पड़ोस में एक सहेली की शादी थी। मैंने सम्पूर्ण शौक से सम्पूर्ण गहने अपनी अम्मा और बुआ जी से लेकर पहने थे। अपने घर से सहेली के घर को जाने में एक मर्दानी बैठक पड़ती थी। मालूम हुआ, वहाँ मेरे शिक्षक हाजिर हैं, अब क्या हो ? गहने लादकर उनकी नजरों के सामने से कैसे गुजरूँ ? इन्तजार किया। समय ढला, लेकिन उत्सव की घड़ी आ उपस्थित हुई। शिक्षक वहाँ से खिसके नहीं। लाचार हो, हिम्मत की और तेजगति से उनकी नहीं अपितु अपनी नजर बचाते हुये निकल गई, पड़ोस में विवाह था अतः मैंने इन्तजाम कर रखा था। मेरी ग़ैरहाजिरी में मेरी सखियों के सामने सहृदय गुरू जी ने मेरे [illegible]दिन के वेश पर हार्दिक दुःख प्रकट किया। बात मुझ तक आनी ही थी। अतः शौक का नशा उतरा।

इसी तरह एक बार और ऐसा हुआ कि मैंने कान में भारी जेवर पहन रखा था, जेवर की घुण्डी पेंचदार होने से धीरे धीरे कान कटता रहा और लटकता चला, साथ ही कष्टप्रद भी हो चला किन्तु उसे निकालने की इच्छा तो नहीं होती थी। एक दिन कानों का यह हाल बुआ जी ने देख लिया, उनको कान पर दया आई, एक कान से उन्होंने कनौती निकाल ली। दूसरे कान से न निकाल सकीं। वह माँस में अपना घर बना चुकी थी। बात अन्त में पिता जी तक पहुँची। अब उनकी नाराजी ! सुनार आया, कनौती निकाली, कान हलका हुआ। मेहरबानी खुदा की, कान फटने से बाल बाल बच गया। इस घटना के बाद गहनों का शौक समाप्त हो गया और शादी के बाद भी उसमें ज्वर नहीं आया। —सुजाता

बम्बई का धड़ाका और उसके बाद

१४ अप्रैल १६४४ की रात बहुतों के लिये एक दुःस्वप्न थी। धड़ाके के फलस्वरूप ऐसी जबर्दस्त आग लगी की जैसी भारत में बहुत कम लगी होगी। सैकड़ों मददगार अपने प्राणों की बाजी लगा कर इसका सामना कर रहे थे। ये कर्मी कोयले से ढँके हुए, धुँए से अन्धे से हुए, भट्टे की सी आग में रात भर लपटों का मुकाबला करते रहे और टनों मलवा उन्होंने साफ किया। सवेरा हो गया पर उनका काम खतम नहीं हुआ था, शरीर जवाब दे रहा था।

सवेरे तड़के ही सबसे प्रिय तरोताजगी लाने वाला और सहनशक्ति बढ़ाने वाला जलपान आया। उजड़े हुए उस पूरे स्थान में इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड की चाय-गाड़ी चलती फिरती दिख रही थी। काम करने वाला हर आदमी थक गया था और सुस्त हो रहा था। सभी की टीन में बन्द मांस के साथ दो टुकड़ा रोटी की सैंडविच और एक प्याला गर्मागर्म चाय दी गई। सैंडविचेज सैनिक अधिकारियों ने दी थीं। चाय, बोर्ड ने दी।

१५ अप्रेल को और उसके बाद वाले दिनों में ४५,००० से भी ज्यादा चाय के प्याले बँट गये।

——

मिसेज सरदार नर्मदाप्रसाद सिंह

हमें यह लिखते हुये दुख होता है कि मिसेज सरदार नर्मदाप्रसाद सिंह का गत मास में स्वर्गवास हो गया। सरदार नर्मदाप्रसाद सिंह संयुक्तप्रान्त के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता हैं। इस रूप में सरदार साहब को जो यश मिला है उसका बहुत कुछ श्रेय उनकी स्वर्गीय पत्नी को ही है। वे एक मूक तपस्विनी सी थीं, सुख दुख में एक समान और सदैव अडिग। सरदार के व्यक्तित्व में उन्होंने अपने को खपा दिया था और रानी होकर भी वे कांग्रेस के कार्य में दर दर भटकीं और जेल यात्राएँ कीं। पिछले दिनों उनके प्यारे पुत्र का शुभ विवाह था। शायद उसी को देखने को वे जीवित थीं। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे। हम सरदार साहब के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

श्री स्वराज्यप्रसाद त्रिवेदी

श्री स्वराज्यप्रसाद त्रिवेदी सी० पी० के नवयुवक कवियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। उनकी कविताएँ बहुत सुन्दर होती हैं। 'दीदी' के पिछले अङ्कों में हम उनकी रचनाएँ प्रकाशित कर चुके हैं। आगामी अङ्कों में भी हम उनकी रचनाएँ छापेंगे। 'दीदी पर उनकी विशेष कृपा है।

महिला विद्यामन्दिर प्रयाग

श्रीमती रमादेवी टण्डन 'सरस्वती' ने प्रयाग में महिला विद्यामन्दिर नाम की एक पाठशाला प्रौढ़ स्त्रियों के लिये स्थापित की है। इसका सारा प्रबन्ध स्त्रियों के हाथ में है। इसका ध्येय प्रौढ़ स्त्रियों को आदर्श गृहिणी बनाना है। उस पाठशाला में चौथी कक्षा पास लड़कियों को साल भर में ही मिडिल का इम्तहान पास कराया जाता है। इस वर्ष सिलाई बुनाई आदि की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है। स्कूल पहली जुलाई को ११ बजे दिन से खुलेगा। विशेष जानकारी के लिये प्रधान अध्यापिका महिला विद्... मन्दिर ५६३, अहि... (अहिराना) इल...ाद से मिलें याँ प... यव-हार करें।

केश विन्यास

कहते हैं स्वीडन में किसी समय केश बढ़ाने का यह तरीका प्रचलित था। स्त्रियाँ छत से केश बाँध कर लटक जाया करती थीं। हम इस पर विश्वास नहीं करते। परन्तु एक प्रसिद्ध अमरीकन लेखिका कहती हैं कि इस कहावत में कुछ तथ्य है। केश विन्यास पर उन्होंने बहुत ही सुन्दर लेख लिखा है। उसे हम अन्यत्र प्रकाशित करते हैं। पाठिकाएँ उसे अवश्य पढ़ें।

विवाहित स्त्री पुरुषों के जानने योग्य !

आपरेशन तथा इन्जेक्शन जरूरी नहीं है !!

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक गुप्त रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम रोग हो गया है जो गर्भधारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयङ्कर रोगों की जिससे उतपत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में है तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताजा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से [illegible]त—मूँगा जिसका प्रधान अंग है—१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारीसुधा कार्डियल** सेवन करें।

नारीसुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटा[illegible] था निपट बांझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिती हो जाती है। जहाँ इन्जेंकशन लिकोरिया (सफेदे[illegible] गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही खुराकों में यह सदैव के लिये ठीक हो जाता है। कमजोरी से गर्भाश[illegible] अपनी जगह से हट जाता है तथा गर्भपात होते रहते हैं। [illegible] बोतल के सेवन से युक्त स्थान पर दृढ़ हो जाता है फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार की बजाय ठीक समय पर खुल कर हँसते खेलते होने लगते हैं जिससे हिस्टीरिया (बेहोशी) के दौरे पड़ने बन्द हो जाते है। भूख खूब लगती है। खून एक बड़ी संख्या में बनने लगता है। दिल की धड़कन कमर टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जाये का सङ्कट सहन करने तथा बाद की कमजोरी शीघ्र पूरी करने की यह विशेष औषधि है। **नारीसुधा** की २६ खुराकों की एक बोतल का मूल्य पेकिङ्ग वी० पी० व्यय से पृथक तीन रु० पाँच आना है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एण्ड कं० देहली से मँगाइये।

KUMAR KUMAR & Co. DELHI

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
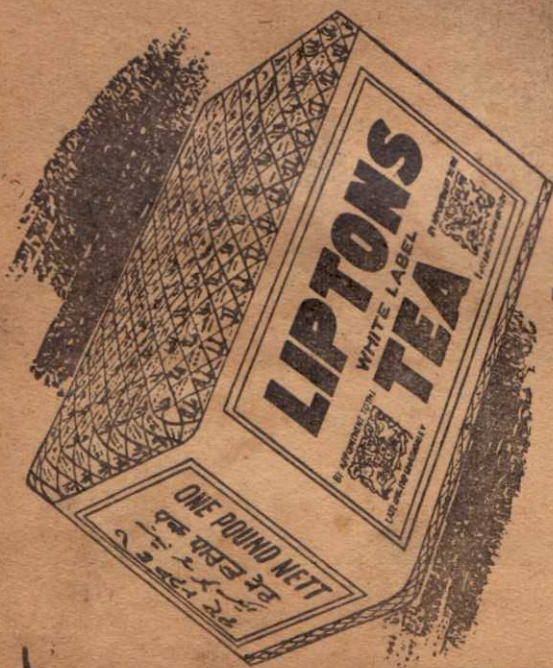
केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि !

६ महीने में एड़ी चुम्बी केश !

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नए केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रति मास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। ३ शीशियों से अधिक डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिये ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिये।

पता—'अलकपरी' नया कटरा, इलाहाबाद

'दीदी' ग्रन्थमाला

स्त्रियों के काम की सुन्दर अपटू-डेट पुस्तकें हिन्दी में नहीं के बराबर हैं। हमारा इरादा शुरू से 'दीदी' कार्यालय द्वारा एक ग्रन्थमाला प्रकाशित करने का था। परन्तु हमें जो भी कागज मिलता था वह हम 'दीदी' में लगाते चले जाते थे। इस प्रकार 'दीदी' ग्रन्थमाला का काम रुका रह गया। अब सरकार ने कागज के सम्बन्ध में और भी कड़ाई शुरू की है। अखबारी कागज के सिवा हम और कोई कागज अब 'दीदी' में नहीं छाप सकते। अतएव हमने निश्चय किया है कि अखबारी कागज के सिवा हमें और जो भी कागज प्राप्त होगा उसे हम 'दीदी' ग्रन्थमाला के प्रकाशन में लगावेंगे।

पाँच नये प्रकाशन

इस ग्रन्थमाला द्वारा शीघ्र ही पाँच पुस्तकें एक साथ या क्रमशः प्रकाशित होंगी। वे अनुभवी विद्वान महिलाओं द्वारा लिखी जायँगी और उनमें नई से नई बातों का समावेश होगा। संक्षेप में वे इस प्रकार होंगी।

(१) केश विन्यास—[केशों को बढ़ाने, उनकी रक्षा करने, उन्हें सँवारने आदि के विषय में परम उपयोगी पुस्तक]

(२) आधुनिक शिशु-पालन—[जन्म के समय से लेकर ३ वर्ष तक की आयु के बच्चों के पालन पोषण, उनकी बीमारी व इलाज, उनकी पोषाक व शिक्षा आदि का विस्तृत वर्णन]

(३) स्वास्थ्य और सौंदर्य—[तन्दुरुस्ती और सौंदर्य बढ़ाने के उपाय और साधन]

(४) रसोंई—[किसी ऋतु में और किस अवस्था के मनुष्य के लिये क्या पकाना चाहिये। गर्भिणी, बच्चों और बीमारों आदि के भोजन पर विशेष अध्याय। विविध पकवान सालन, सलाद आदि की विधि]

(५) नवविवाहिता—[नई दुलहनों के जानने योग्य समस्त बातें]

जो इस ग्रन्थमाला के ग्राहक बनना चाहें वे अभी से हमें एक कार्ड लिख दें क्योंकि पुस्तकें गिनती की छापी जायँगी !

निवेदिका—

सञ्चालिका 'दीदी', इलाहाबाद

नारी का अधिकार

मुगल चित्रकला के सूक्ष्म सौन्दर्य और शालीनता के आवरण में गृहिणी रूप में नारी की जिस महिमान्वित मूर्ति का विकाश हुआ है, वह हमें परम प्रिय और श्रद्धेय है। इस युग में पड़ोस की महिलायें जब आपके घर आती हैं तब उन्हें चाय पिलाने में भी वही महिमा और सौन्दर्य प्रकट होता है। आपलोगों की खुले दिल की बातचीत में चाय से ही सौन्दर्य व सुरुचि का भाव आता है। जब आप सब इकट्ठी होती हैं तब चाय ही अंतरंगता की लहर ला देती है। इसीलिये महिला-जगत में चाय आज इतनी प्रिय है। सखी-सहेलियाँ जब आप के घर आँय तो चाय पिलाकर उन्हें तृप्त किया कीजिये।

★

"नित्य कर्म" नामक हमारी सचित्र पुस्तिका पढ़कर देखिये, दैनिक जीवन में चाय का स्थान कितना ऊँचा है। इस विज्ञापन को काट, अपना नाम और पता साफ-साफ लिखकर, कमिश्नर फौर इण्डिया, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, पोस्ट बक्स नम्बर २१७२ कलकत्ता के पते पर भेज दीजिये। पुस्तिका की एक प्रति आपको बिना-मूल्य भेज दी जायगी।
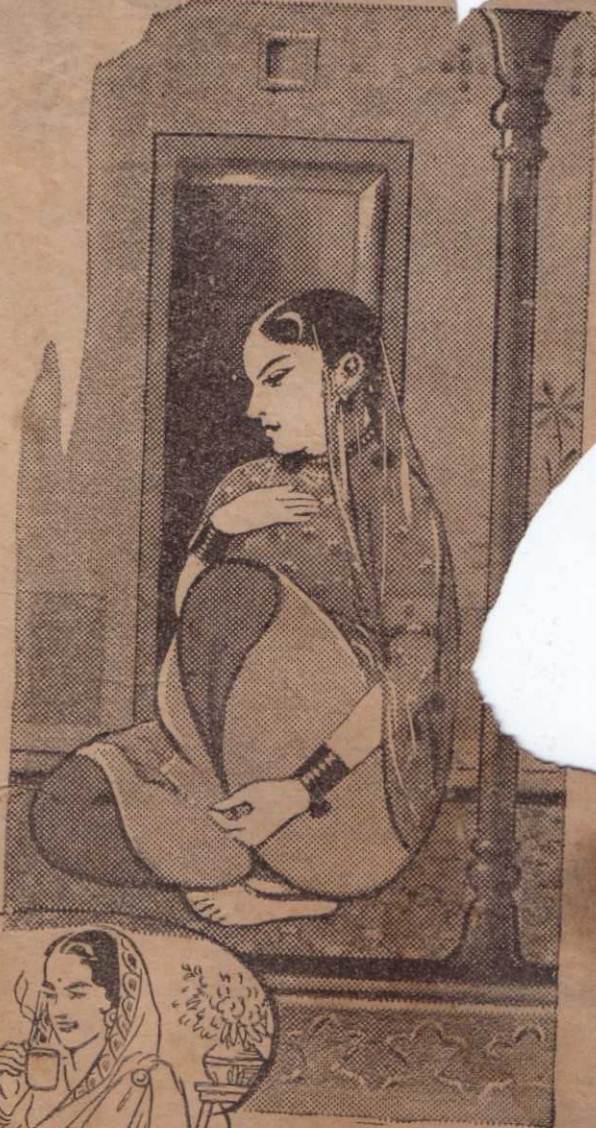
भारतीय चाय

एकमात्र पारिवारिक पेय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 205

Printed and published by Shri... ...ngh at the Didi Press, Katra, Allahabad.